ज्ञानामृत

जुलाई, 1983
वर्ष 19 ❋ अंक 1

मूल्य 1.35

परमात्मा ज्ञान सूर्य है तथा शान्ति, प्रेम तथा आनन्द के सागर हैं। भिन्न-२ मनुष्यात्माएं, साधु, भक्त इत्यादि अपने-२ पुरुषार्थ और शक्ति अनुसार ही परमात्मा से प्राप्ति करती हैं। परमात्मा की महिमा अपरमपार है। यदि सर्व वृक्षों को कलम बनाया जावे, सागर को स्याही बनाई जावे और पृथ्वी को कागज बनाया जाए तब भी परमात्मा की महिमा नहीं लिखी जा सकती।

राजस्थान के राज्यपाल भ्राता ओ. पी. मेहरा आबू स्थित ओमशान्ति भवन में पधारे। ओमशान्ति भवन का अवलोकन करके बहुत प्रसन्न हुए। ब्र० कु० निर्वैर जी उन्हें ईश्वरीय सौगात दे रहे हैं।

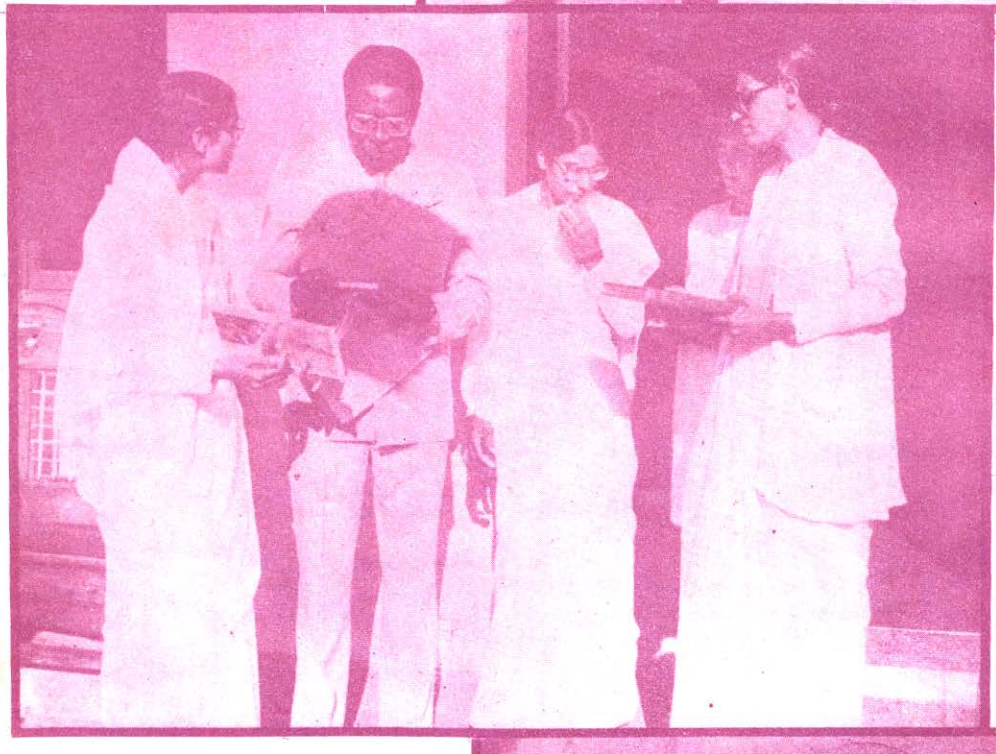

ज़िम्बाबवे के प्रधान मंत्री ईश्वरीय सन्देश देती हुई बहनें।

भूपाल बरखेड़ा में राजयोग प्रदर्शनी देखने के पश्चात् भ्राता टी. एस. वसीर, महाप्रबन्धक बी. एच. ई. एल. (B. H. E. L.) ब्र० कु० शैलम से लक्ष्मी नारायण का चित्र सौगात लेते हुए।

शक्तिनगर – देहली सेवा केन्द्र द्वारा समयपुर गांव में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी के चित्रों की व्याख्या करती हुई ब्र०कु० चक्रधारी जी। ब्र०कु० सुधा, लाज, रानी साथ में हैं।

कृष्णा नगर—देहली सेवा केन्द्र की ओर से पंडित पार्क में चरित्र निर्माण प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए भ्राता दर्शन कुमार बहल, महानगर पार्षद, देहली। साथ में ब्र०कु० कमलमणि जी ब्र० कु० जगरूपजी तथा अन्य भाई बहने खड़े हैं।

वैलिंगटन (न्युज़ीलैन्ड) में ब्र०कु० भावना सुप्रसिद्ध धार्मिक पत्रकार को ईश्वरीय संदेश देते हुए।

श्रीलंका के हाई कमिश्नर भ्राता बरनार्ड पी. तिलकारतना परिवार सहित नई दिल्ली साऊथ एक्स्टैन्श स्थित आध्यात्मिक संग्रहालय देखने पधारे। चित्र में बाएं सिरे पर ब्र०कु० रमेश (कलकत्ता) तथा दाएं छोर पर ब्र० कु० शान्ति खड़े हैं।

Regd. No. 10563/65-D (E)—70

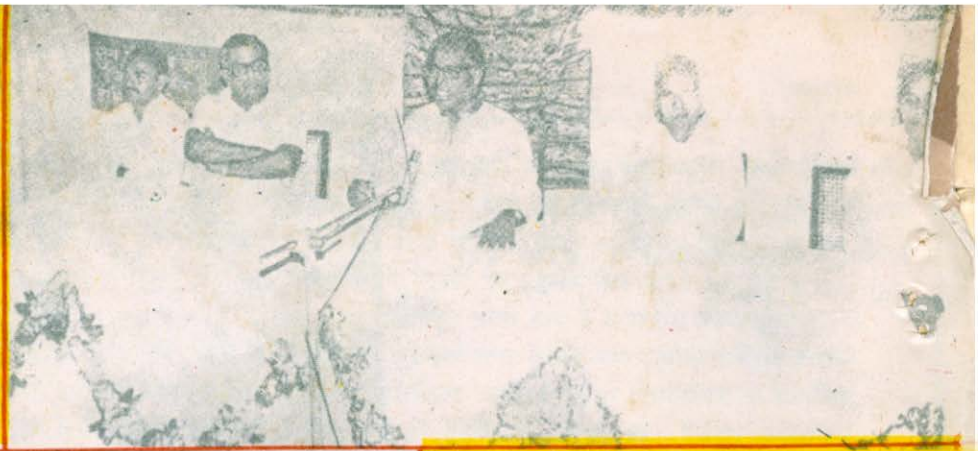

ब्र० कु० करुणा, सम्पादक मुरली अपनी विदेश यात्रा से लौटने पर सिरोही में अपने उद्‌गार प्रकट करते हुए।

ब्र० कु० मोहिनी, ब्र० कु० डॉ० निर्मला तथा ब्र० कु० जशोदा न्युजीलैन्ड के विपक्ष के नेता भ्राता रोलिंग को सन्देश देने के पश्चात् चित्र में खड़े हैं।

कैप्टेन ओमटसोला डी०पी०, नाईजेरिया हाई कमिशन के रक्षा सलाहकार ने आबू पर्वत स्थित मघुबन—पाण्डव भवन की यात्रा की।

वैलिंगटन (न्युजीलैण्ड) में ब्र०कु० भावना तथा ब्र०कु० रमिला सुप्रसिद्ध संगीतकार बहन लता मंगेश्कर को ईश्वरीय संदेश देते हुए।

अमृत-सूची

क्र० सं०	विषय	पृष्ठ
१.	एक-दूसरे को नम्र-चित्त होकर सावधानी देना ही सच्चा प्रेम है	१
२.	क्या यह सेवा नहीं हैं ? (सम्पादकीय)	२
३.	हमने पवित्रता का व्रत लिया है	५
४.	शान्ति की खोज	८
५.	सचित्र समाचार	९
६.	किसी को भी बताना नहीं	१०
७.	समाचार-चित्रों में	१२
८.	ज्ञान धन और पवित्रता धन	१३
९.	चल रे युवा, अब आगे आ (कविता)	१५
१०.	माया मासी या माया फांसी	१६
११.	"कहीं नहीं" (कविता)	१७
१२.	सतयुग-भाग्य और भाग्य-विधाता	१८
१३.	समाचार-चित्रों में	२१
१४.	रोज़ मालिकम सलाम् कहते हैं	२२
१५.	अनोखी सीट	२३
१६.	सचित्र समाचार	२४
१७.	सच्चा प्यार (नाटक)	२५
१८.	गीत	२८
१९.	'बचाओ' और 'बच्चे आओ'	२८
२०.	अन्न का मन पर और मन का अन्न पर प्रभाव	२९
२१.	आध्यात्मिक सेवा समाचार	३१

एक-दूसरे को नम्र-चित्त होकर सावधानी देना ही सच्चा प्रेम है

ले० ब्रह्माकुमारी गंगा, मुरादाबाद

परमप्रिय परमपिता परमात्मा शिव कहते हैं—"वत्सो, भला जानते हो कि आप में परस्पर प्रेम कैसे होना चाहिये ? एक-दूसरे के द्वारा मिली हुई सावधानी को ही पारस्परिक प्रेम मानना चाहिये। अगर आप को कोई सावधानी देता है तो समझना चाहिये कि उसने मेरे कल्याण की बात की, अथवा मेरी ज्ञान-सेवा की। अतः उससे रुष्ट होने की बजाय उसको सम्मान देना चाहिये। हर-एक बात में पहले तो स्वयं को ही सावधान करना है, तब ही किसी दूसरे को **नम्र-चित्त होकर और मधुर अवस्था में स्थित** होकर सावधान करना चाहिये। इस रीति से चलने से आपको ऐसा आन्तरिक अनुभव होगा कि अब सतयुग के दिन निकट आ रहे हैं।

कृपया ध्यान दीजिये

आपको ज्ञानामृत के पिछले २ अंकों से यह तो विदित हो ही गया है कि जुलाई मास से ज्ञानामत का नया वर्ष प्रारम्भ हुआ है। हमने सर्व केन्द्रों पर पत्रों द्वारा भी सूचित किया था कि वर्ष ८३-८४ के लिये अपने सेवाकेन्द्र के ज्ञानामृत तथा वर्ल्डरिन्युवल के सदस्यों की संख्या शीघ्र अति शीघ्र भेजें। परन्तु अभी तक भी ड्रामा अनुसार कुछ सेवाकेन्द्रों से संख्या नहीं आई है। कृपया यह सूचना देखते ही ज्ञानामृत तथा वर्ल्डरिन्युवल के सदस्यों की संख्या तथा शुल्क शीघ्र अति शीघ्र भेजें।

शुल्क केवल निम्न नाम और पते पर मनीआर्डर या ड्राफ़्ट द्वारा भेजें।

"ज्ञानामत"
बी ९/१९ कृष्णानगर
देहली-५१

"The World Renewal"
B-9/19 Krishna Nagar
Delhi-51

क्या यह सेवा नहीं है ?

ज्ञान का उद्देश्य दुःख की निवृत्ति और सुख की प्राप्ति माना गया है। प्रायः लोग यह पूछा करते हैं कि "अगले जन्म में ज्ञान से जो प्राप्ति होगी, उसको तो अभी हम नहीं देख सकते और इसलिए वह कोई प्रमाणित अथवा सिद्ध कोटि की बात नहीं; क्या हमें आप इस जन्म में प्राप्त हुए सुख के कुछ उदाहरण दे सकते हैं ? इस विज्ञान के युग में आपके पास ऐसी क्या कला है कि जो विज्ञान नहीं कर सकता, वह आप कर सकते हैं ?" अन्य लोग इसी प्रश्न को भिन्न शब्दों में पूछते हुए कहते है, "आपका ईश्वरीय विश्व विद्यालय समाज की क्या सेवा कर रहा है ?"

यह सत्य है कि यह ईश्वरीय विश्वविद्यालय जन-जन के जीवन को निर्विकार बनाकर उन्हें शान्ति की अनुभूति करा रहा है। परन्तु जो लोग उपरोक्त प्रकार के प्रश्न करते हैं, वे किन्हीं सामाजिक समस्याओं के हल के रूप में हमारे ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की सेवाओं को जानना चाहते हैं। निस्सन्देह यह ईश्वरीय विश्वविद्यालय इस प्रकार की भी बहुत-सी सेवाएँ कर रहा है।

पिछले १०-२० वर्षों से पाश्चात्य देशों में एक नई प्रकार की सेवा शुरू हुई। कुछ लोगों का इस ओर ध्यान गया है कि जो लोग असाध्य रोगों (Incurable diseases) से पीड़ित होते हैं अथवा ऐसी बीमारियों से ग्रस्त होते हैं जो घातक हैं, उनको मरने से पहले के जीवन-काल में कैसे शान्ति दी जाये। देखा गया है कि जब किसी रोगी को पता चल जाता है कि वह मृत्यु-प्रद रोग में ग्रस्त (Terminally ill) है तो उसे सदमा-सा पहुँचता है। तब से लेकर उसका चेहरा पीला पड़ने लग जाता है, उसकी आँखें बाहर निकलना शुरू हो जाती हैं, वह जब परिचित लोगों को देखता है तो उसका जी भर आता है और उसके मानसिक क्षितिज पर निराशा के बादल घिर आते हैं। लड़ाई के स्थल पर जैसे कोई निःशस्त्र व्यक्ति अपने को आक्रमणकारी के सम्मुख अनुभव करता है अथवा शेर को देख कर मेमने की जो स्थिति होती है, कुछ वैसा ही वह अनुभव करने लगता है। ऐसे व्यक्ति की इस करुणोत्पादक स्थिति को देखकर उसके स्नेही और सम्बन्धी भी कुछ शिथिलता, निराशा और लाचारी की दशा में स्वयं को महसूस करते हैं। स्वयं डाक्टर ही ऐसे रोगी को देखकर सोच में पड़ जाता है कि इस रोगी का क्या किया जाए। इस प्रकार सारे वातावरण में एक निराशा की लहर दौड़ जाती है। इस दशा को देखकर कई विदेशी लोगों ने इसका गहन अध्ययन किया है। इसके विषय में कई प्रयोग (Experiments) किये हैं और ऐसे रोगियों को राहत देने के लिये एक नया विज्ञान रूप लेने लगा है।

इस प्रकार की शोध (Research) करने वाले लोगों का ध्यान इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय के कार्य की ओर नहीं गया वरना उन्हें यहाँ की सेवायें देखकर आश्चर्य भी होगा और खुशी भी। अभी हम हाल ही का एक किस्सा बताते हैं जो इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय की सेवाओं से सम्बन्धित है। देहली-स्थित शक्ति नगर सेवा केन्द्र से सम्बन्धित एक उप-केन्द्र विजय नगर में है। वहाँ लगभग १२-१४ वर्ष से एक माता, जिसका नाम सुख देवी था, ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त करने के लिए आया करती थी। वह कुछ समय से गले के कैंसर (Throat Cancer) के रोग से ग्रस्त चली आ रही थी परन्तु इसका पता कुछ ही मास पहले उसे और उसके सम्बन्धियों को तब चला जब एक दिन उसके लिए खाना निगलना दुश्वार हो गया और डाक्टरों को दिखाने पर उन्होंने इस रोग के बारे में बताया।

यह पता चल जाने पर भी उस माता सुखदेवी की स्थिति में कोई हलचल उत्पन्न नहीं हुई। उसकी बोल-चाल, उसके हाव-भाव और उसके व्यवहार में न तो चिन्ता, न भय, न दुःख और न मोह के चिह्न थे बल्कि ज्ञानी और योगी के जो लक्षण श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित हैं, वे उसमें प्रकट थे।

वह शिव बाबा की याद में रहती और उन्हीं के गुण गाती थी। उसकी बोल-चाल से ऐसा नहीं लगता था कि उसकी कुछ इच्छाएँ अभी पूर्ण होना बाकी हैं और उनकी अपूर्ति के कारण वह विचार निमग्न है बल्कि उसकी बातचीत से ऐसा लगता कि उसकी सभी मनोकामनाएँ पूर्ण हो गई हैं और अब वह इस शरीर से जाने के लिए ऐसे तैयार है जैसे कि स्थानान्तरण (Transfer) का निर्देश आने पर कोई व्यक्ति अपना हिसाब लगभग चुकता कर नये स्थान पर जाने के लिए तैयार हो। उसके मुख्य सम्बन्धी, उसका धर्मपति और उसके बच्चे भी उसकी स्थिति को देखकर आश्चर्यान्वित होते थे और स्वयं डाक्टर भी हैरान था कि रोग विकराल दशा में होने पर भी वह माता कितनी शान्त है।

मृत्यु से कुछ दिन पहले शक्ति नगर सेवा केन्द्र की इन्चार्ज बहन भी सुखदेवी से मिली थी। उनके बीच निम्नलिखित वार्तालाप हुआ।

सेवा केन्द्र इन्चार्ज : कैसे हो ?

सुखदेवी : आनन्द-मौज में।

केन्द्र इन्चार्ज : शिव बाबा याद है ?

सुखदेवी : हाँ, उसी की तो गोद में हूं। मैं तो अब जाने के लिए बिल्कुल तैयार बैठी हूं। बाबा को कहती हूँ कि बाबा, अब मुझे बुला लो।

इन्चार्ज बहन : आप तो हो ही बाबा की और बाबा की गोद में ! फिर कहने की क्या बात, उसको जब, जहाँ, जिस सेवा में लगाना होगा, लगा देगा।

सुखदेवी : हाँ, मैं भी यही कहती हूँ।

केन्द्र इन्चार्ज : आपके बच्चे बड़े-बड़े हैं, क्या आपको उनके बारे में कोई संकल्प नहीं आता ?

सुखदेवी : जिनके छोटे-बच्चे होते हैं, उनका भी सब-कुछ हो जाता है और मैं तो शिव बाबा की बनी हूँ; मुझे इनकी चिन्ता करने की क्या जरूरत है ?

केन्द्र इन्चार्ज : परन्तु उनको तो ख्याल आता होगा ?

सुखदेवी : परन्तु उन्हें आना नहीं चाहिए क्योंकि उस ख्याल से कोई लाभ नहीं। मुझे तो अब उनमें बिल्कुल मोह नहीं।

यह माता सुखदेवी प्रतिदिन ही नियम पूर्वक ज्ञान-मुरली सुनती थी और यह लेख लिखने से एक दिन पूर्व प्रातः लगभग ५.००-५.१५ बजे—जिस समय वह प्रायः अपनी क्लास में जाया करती थी—उसने शान्ति पूर्वक देह रूपी कलेवर को छोड़ दिया।

आर्य समाज के स्थापक स्वामी दयानन्द की जीवन-कहानी में यह वृत्तान्त आता है कि स्वामी दयानन्द के शरीर में विष ने अपना पूरा प्रभाव दिखा दिया था परन्तु फिर भी शरीर छोड़ते समय वे शान्त-चित्त थे और उन्होंने कहा था कि 'हे प्रभु, तेरी इच्छा पूर्ण हो !' इस बात को देखकर प्रभु दत्त जोकि ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं रखता था, तब से ईश्वर-विश्वासी हो गया। आर्य समाजी तथा अन्य धर्म-प्रेमी लोग यह मानते हैं कि शरीर छोड़ते समय मनुष्य की जो स्थिति होती है, उससे ही उसकी धारणाओं का और वास्तविक स्थिति का पता चलता है। पुनश्च, यह भी कहा जाता है कि अन्तिम समय में मनुष्य की स्थिति तभी अचल रहती है जब चिरकाल से उसने अपनी स्थिति को महान बनाने का पुरुषार्थ किया हो। वर्ना मनुष्य का मन चंचल हो जाता है। सुखदेवी की स्थिति को देखकर कोई सिद्धान्त-विरोधी, निष्पक्ष व्यक्ति भी इस बात को मानेगा कि यदि ऐसी स्थिति रहती है तो यह ज्ञान अच्छा है और यह संस्था अच्छी सेवा कर रही है। परन्तु उन्हें मालूम होना चाहिए कि यह एक अकेला ही ऐसा वृत्तान्त नहीं हुआ बल्कि अनेकानेक व्यक्तियों को 'नष्टोमोह : और स्मृतिर्लब्धः' की स्थिति प्राप्त हुई।

अभी पिछले हफ़्ते की बात है कि २७ वर्ष के एक युवक की एक दुर्घटना से मृत्यु हो गई। इस व्यक्ति की माता जिसका नाम विशन देवी है और जो शक्ति नगर के निकट किंग्ज़वे कैम्प के सेवा क्षेत्र में रहती हैं, कई वर्षों से प्रायः ईश्वरीय ज्ञान का लाभ यथा-शक्ति लेती रही। उस व्यक्ति के पिता, जिनका नाम वासुदेव है और जो हौज़री का लघु उद्योग तथा व्यापार करते हैं, भी कुछ समय से अब नियम-वत् ईश्वरीय ज्ञान का श्रवण-मनन कर रहे थे। उनका यह विवाहित जवान पुत्र, जिसके अपने भी दो छोटे बच्चे हैं, ट्रक के नीचे आ गया था। और वह बड़ी बहादुरी से किसी का सहयोग लेकर

हस्पताल पहुँचा। परन्तु इस शरीर का हिसाब-किताब समाप्त हो जाने के कारण यह शरीर ठीक न हो सका और उस आत्मा ने दूसरे दिन वह शरीर छोड़ दिया। साधारणतया एक स्नेह-भाज्य जवान बच्चे की मृत्यु होने पर माता-पिता शोकाकुल हो उठते हैं और घर में मातम छा जाता है। मित्र-सम्बन्धी भी आकर रोने-पीटने का वातावरण बना देते हैं परन्तु इस युवक के माता-पिता इस ज्ञान को प्राप्त करके कि आत्मा अनादि और अविनाशी है और यह शरीर तो नाशवान है और जब तक इस द्वारा कर्मों का खाता चुकता नहीं होता, तब तक ही यह रहता है और फिर आत्मा पंख-पखेरू होकर चला जाता है—धैर्यवत् शान्तचित्त और स्मृति-युक्त तथा नष्टोमोह : स्थिति में रहे। गोया मोहजीत राजा की कथा की यह प्रेक्टीकल पुनरावृत्ति है। उनके मित्र-सम्बन्धी और आस-पास के सभी लोगों ने देखा कि उनकी स्थिति कैसी थी ? लोग उनके घर में रोते-रोते प्रवेश करते थे और हाय-हल्ला मचाने की तथा शोक प्रगट करने की भावना से आते थे परन्तु जिनका वह बेटा था, उन्हें ही ठीक स्थिति में देखकर वे दंग और चुप रह जाते थे और शायद आत्मा की अनश्वरता और मोह-नाश का पाठ भी पढ़कर जाते थे।

ऐसे कितने किस्सों का वर्णन करें ? अभी पिछले दिनों जब मैं ईश्वरीय विश्वविद्यालय के मुख्यालय मधुबन में था, तब वहाँ अहमदाबाद से एक व्यक्ति, जो कैंसर रोग से ग्रस्त था, अव्यक्त बाप-दादा से मिलने आया था। उसकी स्थिति भी शान्त थी और अनुभव सुनने योग्य था।

ईश्वरीय विश्वविद्यालय की सेवायें तो अनेक प्रकार की हैं। आज जो सैकड़ों कन्यायें इस ईश्वरीय सेवा में लगी हैं, वे जीवन के प्रलोभनों, उकसाहटों, आकर्षणों और रंगीनियों के प्रति निश्चेष्ट होकर ही तो इस उच्च सेवा में लगी हुई हैं। इन कन्याओं और युवतियों में ऐसे निसर्ग, त्याग, सेवा और कल्याण-भावना को भरना क्या छोटी बात है ? आज एक कन्या को लोग कितना दहेज देते हैं ! यदि इस प्रकार हिसाब लगाया जाए तो इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय ने दहेज प्रथा को निर्मूल करने में, माताओं के मस्तक को ऊँचा उठाने में, उनके दुःख के आँसू पोंछने में, उनको नर-प्रधान वातावरण से नया श्वास लेने के योग्य बनाने में, नारी के मान को उजागर करने में, उन्हें अपठित, दलित, परि-त्यक्त, तिरस्कृत और निन्दित होने की अवस्था से निकाल जन-जन के दुःख दूर करने की सेवा में लगाने का कितना महान कार्य किया है ! यदि उस सारे दहेजों की रकम को जोड़ा जाए तो उन्होंने अपने अभिभावकों को अरबों नहीं तो करोड़ों रुपये के खर्च से बचा लिया और नारियों से सम्बन्धित अग्नि-काण्डों (Bride-Burning) तथा कामाग्नि में जलने से भी लोगों को मुक्त किया।

सन् १९३७, जब से यह ईश्वरीय विश्वविद्यालय कार्यरत है, तब से इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय ने अनेक पीढ़ियों को जनसंख्या में वृद्धि के अभिशाप से बचा लिया वर्ना एक व्यक्ति की जितनी सन्तति होती और उस सन्तति में से हरेक की आगे जितनी सन्तति होती और फिर उनमें से हरेक की आगे-आगे जितनी सन्तति होती, उन सबका गुणा क्रम (Geometrical Progression) की रीति हिसाब लगाने से, सोचिए तो, कितनी संख्या हो जाती !

इसी प्रकार मद्यपान, धूम्रपान, सिनेमा आदि-आदि से इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय ने लोगों को बीमारी, अपव्यय, बुरे संस्कार से बचाने के रूप में जो कार्य किया है, उसका यदि हिसाब लगाया जाए, तब लोगों को मालूम होगा कि कितनी सेवा हुई है। पहले जो लोग ग़रीब और मैले-कुचैले दिखाई देते थे, इन आदतों को छोड़ने के बाद अब वे भी खुश-हाल देखने में आते हैं। क्या यह ग़रीबों की सेवा नहीं है ?

क्या ही अच्छा हो कि इन सभी प्रकार की सेवाओं का अंक एवं विवरण (Facts & Figures) सहित मूल्यांकन किया जाए और उसे लोगों के सामने रखा जाए—विशेषकर उन लागों के आगे, जो यह कहते हैं कि मनुष्य को रोटी पहुँचाने की सेवा करना ही एकमात्र सेवा है। उन्हें यह मालूम होना चाहिए कि जीवन में अनेक दुःखद परिस्थितियां आती हैं। ईश्वरीय ज्ञान ऐसी परिस्थिति में भी दुःख हरने का कार्य करता है।

—जगदीश

"हमने पवित्रता का व्रत लिया है"

ब्र० कु० सूरज कुमार, माउण्ट आबू

पवित्रता के बल से तुम जो चाहो कर सकते हो— ये ईश्वरीय महावाक्य हमें हमारी पवित्रता की याद दिलाते हैं। "पवित्रता" शब्द ही कितनी निर्मलता के प्रकम्पन प्रवाहित करता है। पवित्रता ही दिव्यता है। इस दिव्यता को प्राप्त करके आत्मा पूर्णतया प्रसन्नचित्त हो उठती है। इससे अन्तरमन की सम्पूर्ण अग्नि शान्त हो जाती है। ऐसी महानतम् पवित्रता की ओर हमारे कदम अग्रसर हैं। अब हम अपने इस लक्ष्य में सम्पूर्णता कैसे प्राप्त करें, इसके लिए कुछ अनुभव-युक्त विचारों का उल्लेख यहाँ किया गया है। "पवित्रता के प्रत्येक राही" को इस प्रकार के विचारों से अपने जीवन में दृढ़ता लानी चाहिए।

जिसने पवित्रता की आज्ञा दी है, उसने शक्ति भी दी है—

ज्ञान के सागर, परम शिक्षक शिव पिता का इस कलियुगी संघर्षात्मक वातावरण में पवित्रता की आज्ञा देना लोगों को समुद्र लाँघने जैसा अवश्य लगता है, परन्तु आज्ञा देने वाले को इसकी कठिनाइयों का सम्पूर्ण ज्ञान है। और क्योंकि वह सम्पूर्ण सष्टि को पावन बनाने आये हैं अतः इस आज्ञा के साथ ही उन्होंने शक्ति भी दी है। जिन आत्माओं ने उनकी इस आज्ञा को शिरोधार्य किया, उन पर ईश्वरीय शक्तियों की किरणें फैलने लगती हैं। अतः ईश्वरीय शक्ति के समक्ष सम्पूर्ण पवित्रता को धारण करना वास्तव में ही सरल कार्य है।

हमने पवित्रता का पथ स्वेच्छा से चुना है।

प्रत्येक ईश्वरीय वत्स जानता है कि उसने यह तपस्या का मार्ग स्वेच्छा से चुना है। और जो कार्य स्वेच्छा से चुना जाता है, चाहे वह कितना ही कठिन क्यों न हो, सरलता से कर लिया जाता है। उसमें आने वाली कठिनाइयाँ भी आनन्ददायक लगती हैं। उसमें चाहे कितने भी कष्ट आयें, उन्हें सहज ही पार कर लिया जाता है। तो जबकि हमने पूर्ण स्वेच्छा से पवित्रता को अपनाया है तो उसमें अब भारीपन क्यों ? प्रत्येक आत्मा जानती है कि पवित्र राहों पर चलकर ही हम नीचे उतरें हैं, हमने दुःख अशान्ति के बीज बोये हैं, अपनी चैन खोई है, इसीलिए तो अब हमने उत्थान का यह सर्वश्रेष्ठ रास्ता चुना है। तो हमें भी इस रास्ते में आने वाली कठिनाइयों में आनन्द अनुभव करना है। आगे बढ़ने का लक्ष्य रक्खेंगे तो निसन्देह आगे बढ़ते जाएंगे।

जिस पेड़ के आम नहीं खाने, उस पेड़ के पत्ते क्यों गिनें—

हम कलियुग की विकारी राहें त्याग चुके। मन से हमने उससे किनारा कर दिया। तो जबकि अब हमें पुनः उन राहों पर नहीं लौटना है तो हम उधर बार बार मुड़कर क्यों देखें ! बार बार उधर देखना स्पष्ट करता है कि हम मार्ग छोड़ तो आये लेकिन हमारी सूक्ष्म रूचि अभी उधर ही लगी हुई है। अतः जिन महान आत्माओं को सम्पूर्ण पवित्रता का लक्ष्य साध्य करना है, उन्हें इस अन्तर मन में छुपी हुई रूचि को भस्मीभूत कर देना चाहिए। और बार-बार चिन्तन करना चाहिए कि जिस पेड़ के आम खाने से हम नर्क में जा गिरे थे, तो अब उसके पत्ते गिनने में क्यों अपने अनमोल क्षण व्यतीत करें।

हमने पवित्रता का व्रत लिया है—

भारतवर्ष में व्रत रखने की प्रथा अति प्राचीन है और आज तक भी माताएँ व्रत में पूर्ण आस्था रखते हुए उसके नियमों की अवहेलना नहीं करतीं। निर्जल व्रत रखने वाली नारी, मरते दम तक भी जल ग्रहण करना नहीं चाहती।

इतिहास में भी कई वीरों के व्रत प्रसिद्ध हैं। कौन नहीं जानता मेवाड़ के महाराणा प्रताप ने अपने व्रत पर अडिग रहकर जंगलों में अनेक कष्टों का आलिंगन सहर्ष किया था। उनका व्रत था कि जब तक मैं मेवाड़ को स्वतन्त्र नहीं करा लूंगा, शैय्या पर नहीं सोऊँगा, महलों में नहीं रहूँगा, और सोने

चाँदी के बर्तनों में भोजन नहीं करूँगा। और इतिहास साक्षी है कि उन्होंने विपदाएँ देखी, परन्तु प्रतिज्ञा नहीं तोड़ी।

हमने भी व्रत लिया है—इस महाशत्रु रावण को विश्व से निष्कासित करने का। सम्पूर्ण पवित्रता हमारा व्रत है और किसी भी कीमत पर हम इस व्रत को निभायेंगे। इस व्रत को निभाने में ही आनन्द है। और यह व्रत ही शक्ति देता है। अपवित्र संकल्प का भी हमारा व्रत है तो हमें प्रतिदिन अपने संकल्पों को दृढ़ करना होगा कि चाहे हमारे प्राण भी चले जाएँ परन्तु हमारा ये सम्पूर्ण पवित्रता का प्रण अमिट रहेगा। तब ही माया को ललकारने की शक्ति हम जीवन में अनुभव कर सकेंगे।

स्मृति को बढ़ावें

जैसे प्रत्येक ब्रह्मावत्स को यह स्मृति दृढ़ हो गई है कि हम ब्रह्माकुमार कुमारी हैं, हमारा खान-पान शुद्ध है। यदि स्वप्न में भी हमें कोई अशुद्ध भोजन दे तो हमारी चेतना इतनी जागृत हो चुकी है कि हम उसे स्वीकार नहीं करेंगे। स्वप्न में भी हमें याद रहता है कि ये हमारा भोजन नहीं है। इसी प्रकार हम यह स्मृति दृढ़ करते चलें कि मैं "पवित्र आत्मा हूं", और अपवित्रता मेरा स्वधर्म नहीं है।

यह स्मृति जैसे २ दृढ़ होती जायेगी, हमारा जीवन स्वप्नों तक भी निर्मल होता जाएगा। **और स्मृति बार-बार के चिन्तन से ही दृढ़ होती है।**

पवित्रता ईश्वरीय वरदान है—

परम पवित्र परमात्मा हम आत्माओं के लिए पवित्रता का वरदान लाये हैं। और जिन्होंने अपना सर्वस्व न्यौछावर किया, उन पर उन्होंने ये वरदान लुटा दिया। अब हमारा कर्त्तव्य है इस वरदान को सुरक्षित रखना। यदि हम इस वरदान को समा नहीं पाते तो हमें अन्य वरदान भला कैसे प्राप्त होंगे। और जिन आत्माओं ने इस सर्वश्रेष्ठ वरदान को पूर्णतया सम्भाला है, उन्हें जीवन में अन्य वरदानों की भी प्राप्ति हुई है। अतः जो ईश्वरीय वरदान हमें मिले हैं, कम से कम हम उन्हें सुरक्षित रखना तो जानें।

हमने भी व्रत लिया है इस महाशत्रु रावण को विश्व से निष्कासित करने का। सम्पूर्ण पवित्रता हमारा व्रत है और किसी भी कीमत पर हम इस व्रत को निभायेंगे। इस व्रत को निभाने में ही आनन्द है। और यह व्रत ही शक्ति देता है। अपवित्र संकल्प का भी हमारा व्रत है तो हमें प्रतिदिन अपने संकल्पों को दृढ़ करना होगा कि चाहे हमारे प्राण भी चले जाएँ परन्तु हमारा यह सम्पूर्ण पवित्रता का प्रण अमिट रहेगा। तब ही माया को ललकारने की शक्ति हम जीवन में अनुभव कर सकेंगे।

भगवान से हमारी मित्रता, पवित्रता पर आधारित है—

मित्रता अर्थात् दो सच्चे दिलों का मिलन। अगर एक मित्र सच्चा न हो, धोखा देता हो तो मित्रता समाप्त हो जाती है। हमारी ईश्वर से मित्रता की नींव पवित्रता ही है। और हमारी यह मित्रता तब ही स्थाई होती है जब हम उसमें पूर्ण वफ़ादार हों। तो हम गुह्यता से विचार करें तो **एक भी अपवित्र संकल्प उठाना अपने उस परम मित्र को धोखा देना है।** और तब यह मित्रता निःसंदेह ही टूट जाएगी और हम उसके स्नेह और सहयोग से वंचित हो जायेंगे। अन्यथा तो वह परममित्र सर्वथा ही हमारा साथ निभाता है।

पवित्रता की शक्ति का सदुपयोग करें—

ब्रह्मचर्य का असीम बल हमारे शरीर में संचित होता रहता है। परन्तु पतित तत्वों से बना हुआ यह शरीर उस शक्ति को अपने में समा नहीं सकता। जबकि सतयुग में वह शक्ति पावन तत्वों में विलीन होती रहती है और देवों के जीवन को दिव्य बनाये रखती है। अतः अब यदि हम उस शक्ति का उपयोग अथवा रूपान्तरीकरण नहीं करेंगे तो अवश्य ही वह शक्ति हमें कठिनाई पैदा करेगी।

कलियुग के कई चिकित्सक ब्रह्मचर्य को तनाव पैदा करने वाला कहकर असम्भव मानते हैं। परन्तु उन्हें शायद यह रहस्य ज्ञात नहीं है कि उस शक्ति का रूपान्तरीकरण भी किया जा सकता है।

जब वैज्ञानिकों ने यह सिद्धान्त खोज निकाला

कि पदार्थ (Matter) को ऊर्जा (Energy) में बदला जा सकता है तो उससे संहारक यन्त्रों का निर्माण हुआ। पहले यह ही मान्यता थी कि पदार्थ, पदार्थ ही रहेगा, उसे ऊर्जा में नहीं बदला जा सकता। इसी प्रकार योगाभ्यास द्वारा ब्रह्मचर्य से संचित इस शक्ति को ऊर्ध्वगामी करके सूक्ष्म ऊर्जा में बदल दिया जाता है। और फिर वह सूक्ष्म ऊर्जा हमारे मस्तिष्क को बहुत दिव्य व शक्तिशाली बना देती है। क्योंकि जब हम अपने मन बुद्धि को परमधाम में परमपिता के स्वरूप पर एकाग्र करते हैं तो हमारी सभी नस-नाड़ियों का खिचाव भी ऊपर की ओर हो जाता है और शक्ति उर्ध्वगामी हो जाती है।

दूसरा—पवित्रता की शक्ति का उपयोग मनन--चिन्तन में भी होता है। अतः पवित्रता के अभ्यासी को मनन पर पूर्ण ध्यान देना चाहिए। इससे शक्ति का रूपान्तरीकरण भी हो जायेगा और फलस्वरूप उस शक्ति की अधिकता से उत्पन्न व्यर्थ संकल्पों से भी मुक्ति हो जायेगी। तो मनन में भी उस शक्ति का उपयोग होता है। और यही कारण है कि चिन्तक मनुष्य कभी मोटे नहीं होते।

उस शक्ति के उपयोग का तीसरा साधन है—परिश्रम। जैसे सर्वविदित है कि खेत में काम करने वाला बैल भी ब्रह्मचारी है। उसकी शक्तियों का प्रयोग परिश्रम में हो जाता है। जबकि साँड विकारी है परन्तु मोटा ताजा होता है, क्योंकि स्वछंद है। अतः उस शक्ति को प्रयोग करने हेतु सच्चे योगियों को शारीरिक काम से जी नहीं चुराना चाहिए। इस प्रकार इस शक्ति को उपयोग करने से वह हमारे मन को प्रज्ज्वलित नहीं करेगी।

पवित्र आत्मा को अन्तर्मुखी होना चाहिए।

एक समझदार व्यक्ति, शक्तियों व ईश्वरीय खज़ानों से भरपूर आत्मा अवश्य ही अन्तर्मुखी होती है। अगर कोई पवित्र रहने वाली आत्मा बाह्यमुखी हो, वाचा रस में तल्लीन रहती हो तो भला उसकी पवित्रता में विश्वास भी कौन करेगा !

यदि कामाग्नि को योगाग्नि से बुझाने में, कोई आत्मा असमर्थ रहती है तो उसका प्रगटीकरण बाह्यमुखता, क्रोधाग्नि, ईर्ष्या-द्वेष की अग्नि या चिड़चिड़ेपन की अग्नि के रूप में होता है। और पवित्रता, चित्त को शीतल करके मन में सुखदायी शुभ-भावना को जन्म देती है।

ईश्वरीय पथ पर अपवित्रता महा-महा-महा पाप है—

यदि किसी किसान ने रेगिस्तान में एक सुन्दर बगीचा बनाया हो, कठिन परिश्रम से उसमें सुन्दर सुन्दर खुशबूदार फूल उगाये हों जिससे सम्पूर्ण क्षेत्र महक उठा हो। और कोई दुराचारी उस बगीचे को नष्ट करने लगे, फूलों को झुलसाने लगे तो उस किसान पर क्या बीतेगी और यह कितना बड़ा पाप होगा !

इसी प्रकार परमपिता, जो कि एक अद्भुत बागवान भी है, इस कलियुगी मरुस्थल में रूहों को पवित्र बना रहे हैं। कितने वर्षों से और बड़ी ही दिव्य मेहनत से वे रूहों रूपी पुष्पों में पवित्रता की सुगन्ध भर रहे हैं, जिसमें कुछ ही समय में सम्पूर्ण जगत महक उठेगा। और यदि कोई मनुष्य उन पवित्र फूलों की ओर बुरी नज़र डाले, उनकी सुगन्धि को नष्ट करना चाहे तो उसका यह कितना भयंकर दुष्कर्म होगा ? क्या वे आत्माएं उनके परम प्यार की अधिकारी होंगी ?

तो हमें इस प्रकार चिन्तन करना चाहिए कि इन चेतन फूलों को स्वयं परमपिता ने सुगन्धित बनाया है। हम इनकी सुगन्ध में दुर्गन्ध न मिलायें, अन्यथा यह महापाप होगा। किसी पवित्र आत्मा के लिए एक भी अपवित्र संकल्प उठाना महापाप है। जैसे यदि कोई मनुष्य श्री लक्ष्मी या सरस्वती देवी के मन्दिर में जाकर उन्हें कुदृष्टि से देखे, तो उसे कितना बड़ा पापी कहेंगे। तो यह महापाप की स्मृति भी आत्मा को इस पाप से मुक्त कर देगी।

इस प्रकार निशदिन चिन्तन करते हुए हमें यह देखना होगा कि हमारा हर कदम, हर संकल्प हमें हमारी सम्पूर्ण पवित्रता की ओर ले चले। हमारा रास्ता लम्बा अवश्य है परन्तु सुखदायी है और हमारा परममित्र हमारे मन को बहलाने के लिए सदा साथ है। अतः यदि इसमें कोई छोटी गलती या स्वप्न में गलती हो जाती है तो जीवन में निराशा के बीज नहीं बोने चाहिए। और बहुत ही धैर्यता व दृढ़ता के साथ अपने लक्ष्य की ओर दौड़ना चाहिए। ★

शांति की खोज

(सुशील गोयल, कश्मीरी गेट दिल्ली)

एक समय में एक बहुत अधिक अमीर आदमी था।

दूर दूर से जैसे नदी-नाले सागर में आ मिलते हैं, वैसे ही धन की सरिताएँ उसकी तिजोरियों में आ गिरती थीं। लेकिन दान के नाम पर एक कानी-कौडी भी उससे नहीं छूटती थी। उसकी बड़ी अप-कीर्ति थी। धीरे-धीरे अपकीर्ति से उसे आत्मग्लानि होने लगी। अन्ततः आत्मग्लानि आत्म क्रांति में परिवर्तित हो गई। लेकिन स्मरण रहे आत्म ग्लानि भी अहंकार का ही उल्टा रूप है, और इसलिए वह भी छूटती कठिनाई से ही है। अक्सर तो वह सीधी होकर स्वयं ही अहंकार बन जाती है। इसी कारण भोगी योगी हो जाते हैं और लोभी, दानी और क्रूर करुणावान— लेकिन बुनियादी रूप से उन आत्माओं में कोई क्रान्ति कभी नहीं होती।

वह धनपति एक ज्ञानी के पास गया। उसने वहाँ जाकर कहा—

"मैं अशांत हूँ। मैं अग्नि में जल रहा हूँ। मुझे शांति चाहिए।"

ज्ञानी ने पूछा : "क्या इतना धन, वैभव, शक्ति-सामर्थ्य होने पर भी तुम्हें शान्ति नहीं मिली ?"

उसने कहा : "नहीं ! मैंने भली-भाँति अनुभव कर लिया, धन में शान्ति नहीं है।"

ज्ञानी ने कहा : "जाओ और अपना सारा धन दान कर दो। फिर मेरे पास आओ—दीन और दरिद्र होकर।"

धनपति ने वैसा ही किया। वह लौटा, तो ज्ञानी ने पूछा, "अब ?"

"अब आपके अतिरिक्त कोई और आश्रय नहीं है।" लेकिन बड़ा अद्‌भुत था वह ज्ञानी। समझो पागल ही था। उसने धक्के देकर उस दरिद्र धनपति को झोंपड़े से बाहर निकाल दिया और द्वार बन्द कर लिए। रात्रि अंधेरी थी और बियावान जंगल था। उस जंगल में उस झोंपड़े के अतिरिक्त और कोई आश्रय भी नहीं था।

धनपति ने सोचा था कि वह बहुत बड़ा कार्य करके लौट रहा है लेकिन यह कैसा स्वागत—यह कैसा व्यवहार ?

धन का संग्रह व्यर्थ पाया था। लेकिन धन का त्याग भी व्यर्थ ही हो गया था।

वह उस रात्रि निराश्रय एक वृक्ष के नीचे सो रहा। उसका अब कोई न सहारा था, न साथी, न उसके पास सम्पदा थी, न शक्ति थी, न संग्रह था, न ब्याज था। सुबह जागकर उसने पाया कि वह एक अनिर्वचनीय शान्ति में डुबा हुआ है। निराश्रय चित्त अनायास ही परमात्मा के आश्रय को पा लेता है।

वह दौड़ा हुआ ज्ञानी के पास पहुंचा। ज्ञानी ने उसे हृदय से लगाया और कहा, "धन छोड़ना आसान है, त्याग छोड़ना कठिन है। किन्तु जो **त्याग का भी त्याग करता है, वही वस्तुतः धन भी छोड़ता है।** संसार छोड़ना सरल है पर धन का आश्रय हो या त्याग का, आत्मग्लानि का आश्रय हो या अभिमान का, संसार का आश्रय हो या सन्यास का, वतुस्तः जहाँ आश्रय है, वही परमात्मा तक पहुँचने में अवरोध है। सभी आश्रय समाप्त होने पर ही **परम आश्रय** उपलब्ध होता है। मैं धन में आश्रय खोजूं या धन त्यागने में, जब तक मैं आश्रय खोजता हूं तब तक मैं अहंकार की रक्षा ही करता हूँ। आश्रय मात्र छोड़ते ही, निराश्रय और असुरक्षित होते ही, आत्मा स्वयं की मूल सत्ता में स्थापित हो ही जाती है। यही है सच्ची शांति। यही है निर्वाण।

शिव बाबा बार-बार हमें समझाते हैं कि बच्चो ! सर्व आश्रयों से बुद्धि योग हटा कर एक मेरे में बुद्धि लगाओ। बाबा कहते हैं घर बार छोड़-कर जंगल जाने की दरकार नहीं परन्तु देह सहित देह के सर्वसम्बन्धों से, इस असार संसार से तथा जो त्याग किया है उसके भी अभिमान से मन हटा कर एक मेरे में मन लगाओ तभी ही सर्व कर्मबधनों से मुक्त हो, मुक्ति, जीवन मुक्ति के अधिकारी बन सकेंगे।

भोपाल वरखेड़ा में आयोजित देवियों की झांकी का अवलोकन के पश्चात् भोपाल स्थित बी० एच० ई० एल० के उप महाप्रबन्धक भ्राता एल० के० सचदेव परिवार सहित उपस्थित है।

▲ ब्र० कु० दिव्य प्रभा, थाना जिला परिषद के प्रमुख भ्राता मीठालाल जी जैन को विश्व शान्ति पथ-प्रदर्शक मेला समझाते हुए।

▲ अंजार स्थित आध्यात्मिक संग्रहालय में वहां के ज्यूडिशयल फर्स्ट क्लास मैजिस्ट्रेट भ्राता शशीकांत पटेल जी विशेष व्यक्तियों के समक्ष अपना आबू का अनुभव सुनाते हुए। साथ में ब्र० कु० उमा, ब्र० कु० उर्मिला तथा कुसुम बहन बैठी है।

▲ खैरगांव (वलसार) में विश्वशान्ति आध्यामिक प्रदर्शनी उद्घाटन समारोह

▲ मणीनगर अहमदाबाद द्वारा बावला नगर में आयोजित चरित्र निर्माण प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए भ्राता जयंत भाई बहेचरदास पटेल, प्रमुख बावलानगर।

▲ ब्र० कु० डॉ० गिरीश पटेल गांधीनगर (गुजरात) में डाक्टरज शिविर में 'मेडीटेशन तथा मेडीसन तथा 'मेन्टल स्ट्रेन और स्वास्थ' विषयों पर प्रवचन करते हुए।

"किसी को भी बताना नहीं !"

ब्र० कु० कमलमणि, कृष्णा नगर, दिल्ली

हर मनुष्य के जीवन में ऐसे कई अवसर आते हैं जब वह किसी को कोई बात किसी अन्य के विषय में सुनाता है और सुनाने के बाद कहता है कि "यह बात मैंने केवल आपको बताई है। अब आप समझ तो गए हैं कि उस व्यक्ति ने क्या-क्या गलत काम किये हैं अथवा वह कैसा आदमी है। अब यह बात आप अपने तक ही रखना, उसे बताना नहीं।" दूसरे किसी अवसर पर हम कोई ऐसी बात, जो किसी व्यक्ति-विशेष के बारे में न भी हो परन्तु गोपनीय हो, हम किसी को सुनाते हैं और फिर कहते हैं कि "यह बात मैंने आपको ही सुनाई है; आप इसे फैलाना नहीं, किसी को सुनाना नहीं।" हम यह भी देखते हैं कि कई बार इस आदत से काफी नुकसान होता है परन्तु फिर भी हम इस आश्चर्यवत व्यवहार को सुधार नहीं पाते। हां, कोई बात ऐसी होती है जो एक निश्चित व्यक्ति को उससे परिचित करने के लिए बतानी भी पड़ती है और साथ-साथ उसे यह भी कहना पड़ता है कि यह बात गुप्त (Confidential) है। परन्तु मनुष्य प्रायः ऐसे लोगों को भी कोई रहस्य बता देता है जिन्हें बताने नहीं चाहिए परन्तु जिन्हें वह अपनी आदत से मजबूर होकर बता देता है। या उन्हें अपना घनिष्ठ मित्र समझकर सुना देता है और तत्काल ही उसे यह भी आभास होता है कि इसका परिणाम खराब भी निकल सकता है। प्रश्न उठता है कि समझदार मनुष्य भी ऐसा क्यों कर बैठता है ?

यदि हम मनुष्य के इस व्यवहार का विश्लेषण करें तो हम इस परिणाम पर पहुंचते हैं कि एक तो उस मनुष्य का अपने मन पर काबू नहीं है जो न बताने योग्य बात को अवाञ्छित अथवा अनावश्यक लोगों को बताता है। जैसे किसी व्यक्ति को अपनी कर्मेन्द्रियों पर नियन्त्रण नहीं होता, वैसे ही उस व्यक्ति में आत्म नियन्त्रण की कमी है अथवा उसका मन निरंकुश है। किसी कार की ब्रेक फेल हो जाने पर जैसे वह रुक नहीं पाती बल्कि दुर्घटनाग्रस्त होती है, वैसे ही उसके मन की लगाम ढीली होने से उसकी ज़बान भी नहीं रुक पाती।

हम यह भी देखते हैं कि आदत से मजबूर होकर भी मनुष्य कई अनुचित कार्यों से रोके जाने पर भी नहीं रुकता। शराबी शराब की आदत से मजबूर होता है, वह अपने मन में समझता है कि शराब पीना खराब है और कि एक दिन उसकी आदत का पता उसके घर वालों को चल ही जाएगा परन्तु फिर भी वह छिप छिप कर शराब पीता है क्योंकि उसके मन में एक उकसाहट सी होती है जिसे वह अपनी आत्मिक दुर्बलता के कारण रोक नहीं सकता। ऐसी ही हालत सिगरेट से सिगरेट लगाकर पीने वाले व्यक्ति की होती है। यह जानते हुए भी कि तम्बाकु का स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है, उसका हाथ सिगरेट के पैकेट की ओर बढ़ जाता है। समझाने पर भी वह ढीठ और निर्लज्ज भले ही बन जाता है परन्तु अपनी आदत को नहीं छोड़ पाता। किसी ने सच कहा है कि जब आदत पक्की हो जाती है तो अनेक धागों से बटे एक रस्से की तरह उसका टूटना भी मुश्किल हो जाता है।

तीसरी बात यह है कि वह जिन्हें बात बताता है उन्हें वह निकटवर्ती, विश्वासपात्र और 'अपना' मानता है। वह यह भूल जाता है कि जैसे वह उसका विश्वासपात्र और अपना मित्र है, वैसे उस व्यक्ति के भी विश्वासपात्र और अपने मित्र होंगे जिनको वह 'गुप्त' बातें भी बता दिया करता होगा। और, जैसे कि वह अपने ज़बान की लगाम खो बैठता है, वैसे उस दूसरे व्यक्ति की जबान पर भी सदा कुण्डा नहीं लगा रहता होगा। जब वह अपने मन पर अंकुश नहीं लगा सकता, तो दूसरे के मत पर उसकी अंकुश लगाने की चेष्टा कैसे सफल हो सकती है ?

इसके अतिरिक्त एक बात यह भी है कि मनुष्य कोई गुप्त बात केवल किन्हीं एक दो व्यक्तियों को बताने तक तो सीमित नहीं रहता। जिसकी ज़बान खुल जाती है, वह फिर जल्दी से मुँह में बन्द नहीं होती। जिन्हें बातें सुनने का चस्का है, वे उससे किसी न किसी तरह से राज निकाल ही लेते हैं क्योंकि वह तो पहले से ही सुनाने को तैयार बैठा होता है कि कोई पूछे और मैं झट उसे बताऊँ। चस्कुआ व्यक्तियों को राज सुनाने वालों की खोज होती है और बातूनी व्यक्तियों को चस्कुआ लोगों की खोज होती है जो कान देकर के उनकी बातें सुने।

वह यह भी नहीं सोचता कि जो व्यक्ति आज विश्वासपात्र है, स्नेही है अथवा निकटवर्ती है, कल उसके भाव बदल भी सकते हैं और वह बताई हुई बात का नाजायज़ प्रयोग भी कर सकता है।

इस प्रकार मूल बात यह है कि इस बीमारी की जड़ वास्तव में शब्द संयम का अभाव है अथवा गम्भीरता रूपी दिव्य गुण की कमी है। ध्यान देने पर हम यह महसूस करेंगे कि हरेक दिव्य गुण मनुष्य को मानसिक नियन्त्रण की ओर आगे बढ़ाता है और उस में व्यावहारिक कुशलता उत्पन्न करता है तथा उसके सदाचार को पुष्ट करता है। गम्भीरता रूपी दिव्य गुण मनुष्य की इस मानसिक कमजोरी को मिटाता है। जैसे ब्रह्मचर्य मनुष्य को कर्मेन्द्रियों पर नियन्त्रण करने में सफल बनाता है वैसे गम्भीरता मनुष्य को ज़बान पर काबू रखने में सक्षम बनाता है। गम्भीर व्यक्ति का व्यक्तित्व प्रभावशाली होता है और वास्तव में लोग उसे ही अपना विश्वासपात्र मानते हैं। यदि मनुष्य गम्भीर न हो तो जैसे सिगरेट पीने वाला व्यक्ति वातावरण को दूषित करता है अथवा शराबी बेकाबू होकर न कहने वाली बातें भी बक देता है वैसे ही वह भी अकथ्य को कहकर वातावरण में तनाव, हलचल, मानसिक टूट फूट, भावनात्मक वैमनस्य से वातावरण को बिगाड़ देता है जिनसे उत्पन्न होने वाली अशान्ति, मानसिक बीमारियाँ और शारीरिक रोग कोई सिगरेट और शराब से कम घातक नहीं होते। अतः मनुष्य को चाहिए कि बात को अमानत समझकर अपनी बुद्धि रूपी सेफ (Safe) में संभाल कर रखे ताकि थोड़ी सी बात से बतंगड़ न बन जाये। और कितने ही लोगों का समय और श्वास व्यर्थ बातों में व्यय न हो। क्योंकि ऐसा व्यय वास्तव में अपव्यय है।

आदत को मिटाने की भी आदत होनी चाहिए। हमारा यह एक स्वभाव बन जाना चाहिए कि हममें जो दुर्गुण है, उसको हम निकाल कर ही रहेंगे। यदि हमारी यही मनोवृत्ति होगी तो हमारी दूषित वृत्तियाँ शीघ्रातिशीघ्र या शनै शनैः ठीक अवश्य होने लगेंगी। "यह हमारी आदत है"—ऐसा कहकर अपनी बुराई को तूल अथवा ढील देने की आदत ठीक नहीं। "हम ऐसा बोल देते हैं, परन्तु हमारा भाव ऐसा नहीं था" —यह कोई दलील नहीं। पटरी से उतरने की बजाय पटरी बदलना ठीक होता है। क्योंकि पटरी से उतरने का अर्थ दुर्घटना और पटरी बदलने का अर्थ दिशा बदलना है। हमें भी अपनी बोलचाल की गाड़ी को इसी नियम के अनुसार चलाना चाहिए। किसी दूसरे को यह कहने की बजाय "यह बात किसी को मत बताना", हमें स्वयं भी वह किसी को नहीं बतानी चाहिए क्योंकि दूसरों पर नियन्त्रण लगा लेने से पहले हमें अपने ऊपर नियन्त्रण लगा लेना चाहिए।

आध्यात्मिक सेवा समाचार

(पृष्ठ ३२ का शेष)

"चण्डीगढ़ में उद्योग में योग प्रदर्शनी"

चण्डीगढ़ तथा मोहाली की निम्नलिखित बड़ी-बड़ी फेक्टरीज में योग प्रदर्शनी का आयोजन किया गया :—

१. मीटर फैक्टरी, चण्डीगढ़ २. मोडेला वूलन मिलज, चण्डीगढ़ ३. भूषण इन्ड्रस्टरीज, चण्डीगढ़ ४. पंजाब टैरक्टरज, मोहाली ५. पंजाब डिसपले डिवाइसिज मोहाली ६. यूनीवर्सल मैगनैटिक, मोहाली ७. पंजाब आनन्द बैटरीज, मोहाली।

इन सभी स्थानों पर बहुत बड़ी संख्या में वरकरज और अधिकारियों ने प्रदशनी देख कर अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने की प्रेरणा ली।

पटेल नगर, नई दिल्ली में प्रदर्शनी

पटेल नगर सेवा केन्द्र की ओर से दो दिन के लिये 'मानव कल्याण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन दिल्ली नगर निगम की निर्माण समिति के उपाध्यक्ष व पटेल नगर क्षेत्र के नगर निगम सदस्य भ्राता अमरजीतसिंह पाहवा जी ने किया। प्रदर्शनी के पश्चात सेवा केन्द्र पर त्रिदिवसीय राजयोग शिविर का भी आयोजन किया गया।

'होडल' में आध्यात्मिक प्रदर्शनी

पटेल नगर सेवा केन्द्र की ओर से ही पलवल के निकट होडल के पंजाबी गुरूद्वारा में त्रिदिवसीय आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन होडल के सुप्रसिद्ध जनता पार्टी नेता भ्राता ध्रुव चन्द बन्सल जी ने किया।

जयपुर सेवा केन्द्र द्वारा आयोजित राजानांद गांव में प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए बी० के० एस० रे, जिलाध्यक्ष राजानांद गांव। साथ में उनकी पत्नी भी साथ दे रही हैं। ब्र० कु० कमला बिमला, मंजू बहन भी चित्र में हैं।

अहमदाबाद के नारायणपुरा सेवा केन्द्र की ओर से 8 से 3 वर्ष तक की आयु वाली बालिकाओं के लिये त्रिदिवसीय एक विशेष आध्यात्मिक कैम्प रखा गया। चित्र में नन्ही-नन्हीं बालाएं शिव पिता की याद में।

बद्रीनाथ में विश्व-नव-निर्माण प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए स्वामी शाश्वतानन्द सरस्वती जी। ब्र० कु० नीना, अनिता तथा अन्य भाई बहन चित्र में खड़े हैं।

हुबली— विद्यानगर सेवाकेन्द्र के 8वें वार्षिक उत्सव पर (बाएं से) ब्र० कु० इष्टलिंग, भ्राता एस० जी० करबटलाल, स्वामी चरलिंग देवरू, शांता माता ब्र० कु० लीलावंती तथा ब्र० कु० जमुना उपस्थित हैं।

बोकारो में चरित्र निर्माण प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् भ्राता देवेन्द्र प्रसाद, एस० डी० ओ० बीच में उपस्थित हैं। ब्र० कु० कुसुम, सीता अंजू तथा अन्य भाई साथ में हैं।

ज्ञान धन और पवित्रता धन

लेखिका—ब्रह्माकुमारी चक्रधारी, दिल्ली

प्यारे बच्चो, इस भौतिकता प्रधान युग में लोग प्राय: धन को सर्वोपरि मानते हैं। वे नारायण की बजाय नकद नारायण के प्रति अधिक आकृष्ट हैं। धन कमाओ, धन कमाओ—बस, यही धन वे रात-दिन लगाए रहते हैं। धन कमाने में वे इतने विलोन हो जाते हैं कि न उन्हें स्वास्थ्य की सुध रहती है, न वे अध्ययन के लिए कुछ समय निकाल पाते हैं और न ही आत्मिक उन्नति और आनन्द का लाभ ले पाते हैं। गोया उन्हें मालूम ही नहीं कि यद्यपि सरकारी सिक्का रूपी धन जीवन-निर्वाह के लिए आवश्यक है परन्तु सिक्के और सोने-चाँदी तथा हीरे-मणिक और मोती से भी ऊँचा कोई और धन भी है। इस विषय में हमें एक छोटी-सी कहानी याद हो आती है।

जिन दिनों में नगर छोटे थे और उनके थोड़ी ही दूर उपवन और वन शुरू हो जाते थे, उन्हीं दिनों की बात है कि एक प्रभु-प्रेमी, प्रभु-प्रीति में लवलीन हुआ-हुआ नगर से कुछ दूर बैठा अपनी साधना करता रहता था। इधर नगर में एक सेठ को सदा अधिकाधिक धन पाने की लालसा लगी रहती थी। उस धन्ना सेठ को शहर में कहीं से भनक पड़ी कि जंगल में कहीं कोई काफ़ी बड़ा ख़ज़ाना दबा हुआ है परन्तु वह कहाँ है, इसके बारे में किसी को पता नहीं। धन्ना सेठ अपनी किस्मत आज़माने वन की ओर चल पड़ा। जब नगर का मार्ग समाप्त हो गया और वन शुरू हो कर घना-सा होने लगा तब वहाँ उसने एक व्यक्ति को पालथी मार कर मनन-चिन्तन करते हुए देखा। उसके चेहरे पर शान्ति और सन्तोष के चिह्न थे और वह बिल्कुल निश्चिन्त सा दिखाई देता था। वह कायिक रूप से तो शहर से दूर बैठा ही था परन्तु लगता था कि उसका मन भी शहर के हाय-हल्ला से दूर कहीं एकान्त में बस रहा है। धन्ना सेठ ने उसके पास पहुँच कर प्रणाम किया और उससे इन शब्दों में सम्बोधन किया—"महाराज, आपके दर्शन पाकर मेरा मन बहुत प्रसन्न हुआ। आप तो विरक्त हैं परन्तु मैं एक गृहस्थी आदमी हूँ। आपकी कृपा और आपसे वरदान की एक कामना करता हूँ। यदि आप को मुझ पर करुणा हो तो कृपया यह बताने का कष्ट करें कि वन में कोई एक बड़ा ख़ज़ाना कहाँ दबा हुआ है?"

प्रभु-प्रेमी—"परन्तु मेरी तो इन बातों में रुचि नहीं और मैं तो यह कहूँगा कि कमाई करने से जो धन प्राप्त होता है, उसी में ही सन्तोष करना अच्छा है।"

धन्ना सेठ—"मैं मानता हूँ कि आपको इन सांसारिक धन-वैभवों से कोई प्रीति नहीं परन्तु मुझ पर आपकी यह कृपा हो—यह मेरी याचना है।"

प्रभु-प्रेमी—"अच्छा, तो जाओ। उत्तर दिशा की ओर आगे बढ़ते चलो। जब लगभग ४०० कदम

चल चुके होंगे तो वहाँ एक पीपल का पेड़ दिखाई देगा। उस पेड़ की तीन मोटी-मोटी रगें पृथ्वी में धँसती हुई दिखाई देंगी। उनमें से जो मध्यवर्ती रग है और उसके दाहिने ओर जो रग है, उनके बीच के स्थान पर यदि ४ फुट गहरा खोदोगे तो तीन स्वर्ण कलश मिलेंगे जो अपार धन से भरपूर हैं। जाओ, अगर धन ही की कामना है और वह भी बिना कमाई वाले धन की, तो जाकर वे कलश निकाल लो।"

यह कहते हुए वह प्रभु-प्रेमी धन्ना सेठ को दया की दृष्टि से देखने लगा और साथ-साथ मुस्कराने भी लगा।

उस प्रभु-प्रेमी से बात करके धन्ना सेठ की मनोवृत्ति पर कुछ अलौकिक प्रभाव पड़ा परन्तु फिर भी धन की लालसा से खिचा हुआ-सा वह उत्तर दिशा में बढ़ने को उद्यत हुआ और उस प्रभु-प्रेमी को प्रणाम तथा धन्यवाद करके आगे को निकल पड़ा। कदम गिनते-गिनते ४०० कदमों के फासले पर पहुँचा तो वहाँ उसने पीपल के पेड़ की तीन रगें देखी। उस प्रभु-प्रेमी की मार्ग दर्शना के अनुसार उसने उस स्थान को ४ फुट गहरा खोदा तो यह देखकर उसके आश्चर्य का कोई ठिकाना न रहा कि वहाँ तीन स्वर्ण कलश दबे थे। उनको उसने जब खोला तो उसमें हीरे, अशर्फियाँ वगैरहा देखकर दंग रह गया और उसे बेहद खुशी हुई। परन्तु इस विचार ने उसे सोच में डाल दिया कि प्रभु-प्रेमी को जब इस ख़ज़ाने का पता था तो यह ख़ज़ाना उसने स्वयं अपने लिए क्यों न ले लिया। इसलिए इस जिज्ञासा को लेकर वह फिर से उस प्रभु-प्रेमी के पास गया और बोला "महाराज, आपकी कृपा से ख़ज़ाना तो मिल गया परन्तु अब उस ख़ज़ाने के प्रति मेरा कुछ विशेष आकर्षण नहीं है। मेरे मन में यह प्रश्न उठता है कि जब आपको उस ख़ज़ाने का पता था तो आपने स्वयं ही वह ख़ज़ाना क्यों न ले लिया। अवश्य ही आपको उससे भी कोई ऊँची प्राप्ति हुई होगी कि जिससे आपको उस ख़ज़ाने के प्रति कोई आकर्षण नहीं है।

प्रभु-प्रेमी चुप होकर बैठा रहा और उसकी ओर देखता रहा। इसका उस धन्ना सेठ पर कुछ ऐसा प्रभाव पड़ा कि धन के प्रति जो उसकी उत्कट लालसा बनी रहती थी, वह अब मन में नहीं रही। उसी क्षण उस प्रभु-प्रेमी के मुख से ये शब्द निकले—"भाई, आप यही धन माँगते थे, इसलिए आपको उसका रास्ता बता दिया पर सर्वोपरि धन तो ज्ञान धन है। वह धन अविनाशी है और शरीर के नाश होने के बाद भी आत्मा के साथ रहता है और उसे शाश्वत सुख देता है।" यह सुनकर वह धन्ना सेठ अब ज्ञानधन अर्जित करने की ओर प्रवृत्त हुआ।

दक्षिण भारत में एक प्रसिद्ध भक्त हुए हैं—तिरुवल्लूर, वे कपड़े बुनने और बेचने का काम भी साथ-साथ करते थे और प्रभु-प्रेम में रमे रहते थे। एक बार वे बैठे हुए कपड़ा बेच रहे थे कि कहीं दूर से चार-पाँच नवयुवकों ने उन्हें देखा। उसमें से कुछेक न दूसरों को बताया कि ये सन्त तिरुवल्लूर हैं, जो अच्छे भक्त हैं और क्रोध नहीं करते। उनमें से एक युवक जो एक अमीर का लड़का था, यह सुनते ही ऐंठ कर बोला—"अच्छा, मैं देखूँगा कि ये कैसे नहीं क्रोध करता।" सभी युवक उनकी ओर बढ़े। कुछेक ने उस युवक को किसी भी प्रकार की चंचलता करने से मना किया परन्तु वह फिर भी रुका नहीं। सन्त तिरुवल्लूर के निकट जाकर कोई-दो गज़ का कपड़ा उठाकर वह युवक बोला—"यह कितने का है ?"

तिरुवल्लूर—"दो रुपये का दो गज़"

युवक ने उसे दो टकड़ों में फाड़ दिया और हाथ में एक टुकड़ा लेकर बोला—"यह कितने का है ?"

तिरुवल्लूर ने शान्ति पूर्वक कहा—"यह एक रुपये का है।"

वह युवक कपड़े के टकड़े-टुकड़े करता रहा और हर बार उनसे पूछता रहा कि यह कितने का है। तिरुवल्लूर उसे शान्ति पूर्वक कहते रहे— कि ८ आने का, यह ४ आने का, यह २ आने का, यह एक आने का इत्यादि। वह लड़का आवेश से कपड़ा फाड़ता गया और आखिर उसने कपड़े को तार-तार कर दिया। परन्तु उसने देखा कि तिरुवल्लूर के चेहरे पर क्रोध के कोई भी चिह्न नहीं। आखिर वह शर्मिन्दा हुआ और बोला—"ये लो २ रुपये, मैंने

आपके कपड़े का नुकसान कर दिया है न, उसके हैं २ रुपये।" धनवान का लड़का था, उसे धन का अभिमान था। बड़े तपाक से उसने अपनी जेब से २ रुपये निकाल कर तिरुवल्लूर के आगे रख दिये। परन्तु उसने इतना तो समझा ही था कि तिरुवल्लूर ने क्रोध नहीं किया।

तिरुवल्लूर ने वो दो रुपये उठाकर उस युवक की ओर हाथ बढ़ाकर कहा—"बेटा, यह लो अपने २ रुपये क्योंकि घर जाओगे तो तुम्हारे पिताजी कहेंगे कि कपड़ा भी नहीं लाये और दो रुपये भी गँवा आये। तुम्हें ख्वामख्वाह डाँट पड़ेगी और वह मुझे अच्छा नहीं लगेगा। लो, ये रख लो दो रुपये।"

यह सुनकर वह युवक पानी-पानी हो गया। वह उनके चरणों पर गिर गया और बोला—"महाराज, मैंने आपका नुकसान किया, फिर भी आपको गुस्सा क्यों नहीं आया?"

तिरुवल्लूर—"बेटा, यह तो पैसा गया परन्तु गुस्सा करने से तो विवेक भी जाता है और चरित्र भी जाता है। शान्ति भी जाती है और खुशी भी।"

सच है, इस स्थल धन से पवित्रता रूपी धन बड़ा है।

★

चल रे युवा, अब आगे आ

(ब्र० कु० राजकुमारी, मजलिस पार्क, दिल्ली)

चल रे युवा, अब आगे आ।
बाप ने कहा, कुछ करके दिखा ॥
देख! तेरी ओर सबकी निगाहें,
जग को दिखा तू, रुहानी राहें,
शूलों को फूलों में बदल,
आहों को 'वाह!' में बदल
तेरे कदम-कदम में पदम
तेरे हो करम-करम में रहम
घर-घर में जा, चरित्र के दीप जला,
चल रे युवा, अब आगे आ
विध्वंस नहीं, तू निर्माण करेगा,
ज्वलन नहीं, सदा शीतल रहेगा,
न कभी जग डरे तुमसे,
सदा विश्वास करे तुम पे,
ऐसी अपनी अलख जगा,
गुणों की गरीबी हटा,
घर-घर में जा, चरित्र के दीप जला।
चल रे युवा, अब आगे आ ॥
जो विश्व की आस, सारे देश की प्यास
हर आत्मा उदास, तू दिला दे विश्वास
अपने कर्म के दर्पण से, शान्ति के दर्शन करा,
घर-घर में जा, चरित्र के दीप जला
चल रे युवा, अब आगे आ ॥
मुख के आश्वासनों पे विश्वास किसे,
चिर तक न जल सकें ये काठ के दिये,
दृढ़ संकल्प की तीली लगा,
हर आत्मा की तू ज्योति जला,
पावन कर्त्तव्य की ईंट लगा,
नव युग की ओ आधारशिला
घर-घर में जा, चरित्र के दीप जला
चल रे युवा, अब आगे आ।
शुद्ध भावना, शुभ कामना का जल,
परमात्मा विश्वास, तेरा सम्बल,
प्युरिटी की पर्सनैलिटी से सज के,
बेहद की दृष्टि वृत्ति स्वर में भर के,
प्रत्यक्ष करने भगवान बाबा को—
तू घर-घर में जा,
चरित्र के दीप जला।
चल रे युवा, अब आगे आ।
बाप ने कहा, कुछ करके दिखा ॥

माया मासी या माया फांसी ?

(ले०—ब्र० कु० रश्मि, गोरेगाँव, बम्बई)

अक्सर माँ से भी अधिक प्यार-दुलार मासी देती है। इसलिए गुजराती में यह कहावत भी है—
'मां मरे तो भले मरे, पर मासी न मरे।'

इस आध्यात्मिक जीवन में बाबा ने माया को मासी कहा है पर यह कैसी मासी है जो हर वक्त हम नन्हें-मुन्ने बच्चों को शिव बाबा से विमुख करने में तत्पर रहती है ? यह माया 'मासी' भी प्यार देती है, पर वह मायावी अल्पकालीन प्यार है। वह उस चूहे की तरह फूंक भी मारती है और साथ-साथ काटती भी है। इसलिए बाह्य रूप से ऐसा लगता है कि माया हमारा कुछ नहीं बिगाड़ रही है। बल्कि समय बीतने पर मालूम पड़ता है कि उसने जीवन में ज़हर भर दिया है, सब कुछ बिगाड़ दिया है। परिणाम स्वरूप मासी ने प्यार नहीं, पर फाँसी दे दी है। शिव बाबा से विमुख कर दिया है।

वर्तमान समय विज्ञान का युग चल रहा है, बल्कि संगमयुगी ब्राह्मणों के लिए माया से युद्ध करने का समय चल रहा है। कई बार यह प्रश्न उठता है कि यह 'माया' क्या है ? शिव बाबा ने इस दो अक्षर वाले छोटे-से शब्द का बहुत सुन्दर अर्थ हम बच्चों के आगे स्पष्ट किया है। 'माया' अर्थात् पाँच विकार—रावण, जो हमारा दुश्मन बनकर अनेक जन्मों से हमें दुःख देता चला आ रहा है। इसने आत्मा रूपी राम की सुख-शांति रूपी सीता का हरण किया है।

बाबा ने कहा है—देह अभिमान के मूल विकार के आने से ही अन्य विकारों का आक्रमण प्रथम हमारे मस्तिष्क या बुद्धि रूपी पहरेदार पर होता है। **माया** अर्थात् **'मैं' आया**। 'मैं-मैं' करने से माया आती है। माया का प्रवेश होने का सहज मार्ग है—**'मैं-मैं'** करना।

इसलिए शिव बाबा कहते हैं—"बच्चे, जो भी कार्य करते हो, उसमें स्वयं को निमित्त समझो।" शिव बाबा ही मुझसे यह सेवा करा रहे हैं। मैं तो एक साधन मात्र हूँ। अतः 'मैं' को शिव पिता का 'साधन' बना दो। 'मैंने' यह किया, 'मैं' ही कार्य-कर्त्ता हूँ। यह सिर्फ़ देह अभिमान ही नहीं, बल्कि हमारी उन्नति में बाधा डालने वाला एक खतरनाक महाविकार है। 'मैं' रूपी देह अभिमान के आने से ही अन्य विकार भी उसकी परछाई की तरह हमारे मन-मस्तिष्क पर छा जाते हैं।

कई बार प्यारे शिवबाबा कहते हैं—"बच्चे, यह माया तो कुछ भी नहीं है। मन की कमज़ोरी व व्यर्थ संकल्प को ही माया कहते हैं।" बाबा कभी-कभी कहते हैं—"यह माया तो कागज़ का शेर है। एक परीक्षा मात्रा है। इसे खेल समझो।"

संगमयुग पर हमारे अमरनाथ बाबा ने ब्रह्मा-मुख द्वारा 'माया' की यह परिभाषा भी बताई है—"मीठे बच्चे, माया के तूफ़ान तुम्हें आध्यात्मिक जीवन में आगे बढ़ाने के लिए आते हैं। इससे डरो मत। इसे तोफा समझकर आगे बढ़ते चलो।"

पुरुषार्थी बच्चों को सावधान करने हेतु बाबा यह भी समझाते हैं—"जैसे मैं सर्व शक्तिमान हूँ, वैसे माया भी कोई कम नहीं। वह भी उतनी ही सर्वशक्तिमान है, जितना मैं हूँ। महारथी बच्चों से माया भी महारथी बनकर लड़ती है। इसलिए खबरदार रहो।"

माया कई रूप लेकर आगे आती है। अतः उसका सामना करने के लिए हमारे में एक दिव्य शक्ति का होना अति आवश्यक है। वह है—परखने की शक्ति। माया का सामना भी तब कर सकेंगे, जब उसको परखने की शक्ति की मात्रा अधिक रूप में आत्मा में हो।

माया विविध शैद्र-सौम्य रूप धारण कर पुरुषार्थी के पास आती है। सर्वप्रथम वह उसकी बुद्धि पर वार करती है। स्थूल-सूक्ष्म रूप में वह अपना बनाने के लिए यत्नशील रहती है। वह परमात्मा से निश्चय बुद्धि आत्मा को संशय बुद्धि बना देती है। प्रभुमिलन के मधुर स्वाद में रमण करने वाले योगी के जीवन में अल्पकाल के सुखों के

इच्छा रूपी विष का मिश्रण कर देती है। ठिकाने पर पहुँची हुई आत्मा को अपनी मंज़िल पर बिना रुके कदम आगे बढ़ती हुई आत्मा के बुद्धिरूपी नेत्र फोड़कर उसे अंधा बनाकर दर-दर की ठोकरें खिलाती है। बुद्धि का कनेक्शन (तार) प्रभुपिता से टूट चुका, फिर क्या! माया का मार्ग सरल हो गया। वही योगी—जो शिव-साजन से प्रतिज्ञा कर चुका था—'बाबा, मैं आपका हाथ और साथ कभी नहीं छोड़ूंगा। आपका था, आपका हूँ ओर सदा आपका ही रहूँगा।' वह प्रतिज्ञा उसके स्वप्न का खेल बन जाती है।

कल्याणकारी पिता कहते हैं—"हे मेरे मीठे बच्चो, लौकिक परिवार, मित्र-सम्बन्धियों और प्रकृति द्वारा भी माया रूप बदलकर आएगी।" इतना ही नहीं, बाबा कहते हैं—"ब्राह्मण-परिवार द्वारा भी माया के अनेकानेक रूप सामने आएँगे।" उन्हें परखकर माया का सामना कर आगे बढ़ना ही तो हमारा कर्त्तव्य है, पुरुषार्थ है। इस बात पर मुझे एक काव्य की कुछ पंक्तियाँ याद आ रही हैं—

जोश ना ठंडा होने पाए, कदम मिलाकर चल,
मंज़िल तेरे पाँव चूमेगी, आज नहीं तो कल।

हमारे आत्मिक एवं अविनाशी पिता भी कहते हैं—

हिम्मते बच्चे, तो मददे बाप, जिसका साथी है
भगवान, उसको क्या रोकेंगे, आंधी और तूफान।

इसलिए सदा शिव बाबा को अपना साथी बनाकर, कदम-कदम पर उनकी श्रेष्ठ राय—श्रीमत को पालन करते हुए हमें इस दिव्य ज्ञान की राहों पर संभल-संभलकर चलते रहना है, चलते रहना है। □

"कहीं नहीं"

ब्र० कु० मनोज कुमार अग्रवाल, गुमला (बिहार)

तमसा की गोद में
सुखद उजाले के लिए
बिजली के बल्ब तो
हज़ारों जलते हैं
मगर—
सच्ची रोशनी कहीं नहीं
इस धरा पर
इन्सान तो लाखों जीते हैं।
मगर—
सच्ची इंसानियत कहीं नहीं
स्वर्णिम धरा
रत्नों से परिपूरित
हीरे के टुकड़े तो हज़ारों
मिलते हैं
मगर—
सच्चे जौहरी कहीं नहीं
मनु की इस धरा पर
ममता स्नेह ओ' प्रेम
बंधे इस सूत्र से
दोस्त तो हज़ारों मिलते हैं।
मगर—
सच्ची दोस्ती कहीं नहीं
गिरजा-मंदिर-मस्जिद
और गुरुद्वारे
इस राह के पुजारी
हज़ारों तो मिलते हैं।
मगर—
सच्ची पूजा कहीं नहीं

सतयुग–भाग्य और भाग्य-विधाता

ब्र०कु० रमेश, गामदेवी, बम्बई

सतयुग को स्वर्ग भी कहा गया है परन्तु स्वर्ग के बारे में अनेक प्रकार की भ्रांतियां हैं और उन भ्रांतियों के आधार पर कई लोगों ने स्वर्ग को इस पथ्वी से अलग अन्य किसी स्थान पर बसने वाली दुनिया मानी है। अभी हमें स्वर्ग के रचयिता परम-पिता परमात्मा ने बताया है कि स्वर्ग इस सृष्टि के आदिकाल में होता है। स्वर्ग १६ कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी मर्यादा पुरुषोत्तम, अहिंसा परमोधर्म वाले देवी देवताओं की दुनिया है—ऐसा आस्तिक को समझाया जा सकता है। और नास्तिक दृष्टिकोण रखने वाले मनुष्य को समझाने के लिए शिवबाबा ने सतयुग को एक और प्रकार के दष्टिकोण से हम बच्चों को समझाया है कि स्वर्ग अर्थात् "सर्वश्रेष्ठ भाग्यवान लोगों की दुनिया"। गीता में भी भाग्य को पुण्य के रूप में शब्दार्थ लेकर के स्वर्ग को, सर्वश्रेष्ठ पुण्य सम्पन्न लोगों की दुनिया कहा है। और जब इसी भाग्य अथवा पुण्य का क्षय होता है तब यही स्वर्ग मृत्युलोक बन जाता है। मृत्युलोक अर्थात् जल्दी-जल्दी मरने वालों की दुनिया अर्थात् जहां अकाले मृत्यु होता है, ऐसा भी एक अर्थ है।

कई लोग परमात्मा को नहीं मानते हैं परन्तु भाग्य को मानते हैं और अपने भाग्य को जानने के लिए हस्तरेखा तथा जन्मपत्री आदि को मानते और बताते हैं। पश्चिम की दुनिया में भी, चाहे नास्तिक हों या आस्तिक, बहुत लोग जन्मपत्री तथा हस्तरेखा से भाग्य जानने का प्रयत्न करते हैं।

भाग्य के बारे में भी अनेक प्रकार की बातें समझने योग्य हैं। व्यक्ति के भाग्य पर उसके परिवार, समाज, स्थान, देश तथा विश्व के भविष्य आदि अनेक प्रकार की बातों का प्रभाव पड़ता है। हिरोशीमा, नागासाकी में रहने वाले कुछ व्यक्तियों की व्यक्तिगत हस्तरेखाएं सर्वश्रेष्ठ होंगी और उन रेखाओं के आधार पर कईयों की आयु भी दीर्घकाल की होगी लेकिन एक क्षण में अचानक, सब मृत्यु की गोद में चले गये। कारण, उस शहर का अपना भाग्य या तकदीर थी, जिस प्रबल भाग्य ने व्यक्तिगत भाग्य को कुचल (Override) दिया। इस प्रकार भाग्य की विविध प्रकार की बातों को समझने के लिए एक विशेष दर्पण की जरूरत है।

शिव पिता परमात्मा भाग्य विधाता भी हैं और हम बच्चों को कहते हैं कि इस संगमयुग में आप सब बच्चे अपनी भविष्य प्रारब्ध की अथवा भाग्य की लकीरें अभी खिचवा सकते हो। वह भाग्य विधाता न सिर्फ हम बच्चों के भाग्य को जगाते हैं परन्तु हम सब बच्चों को अन्य आत्माओं के भाग्य जगाने वाले मास्टर भाग्य विधाता भी बनाते हैं। दानी, महादानी और वरदानी इन तीनों ही शब्दों का सच्चा अर्थ बताकर, तीनों के ही स्वरूप हमें बताते हैं। सर्वश्रेष्ठ भाग्य क्या है—उसके बारे में शिवबाबा बताते हैं कि **व्यक्ति, परिवार, समय, देश और विश्व सबका सर्वश्रेष्ठ भाग्य एक ही समय हो उसको स्वर्ग कहा जाता है।** सर्वश्रेष्ठ भाग्य को समझने के लिए निम्नलिखित पांच बातों का सार रूप हम बच्चों को बता करके परमात्मा भी हमारे भाग्य का दीपक जगाते हैं जिससे सतयुग अर्थात् स्वर्ग में ऐसा सर्वश्रेष्ठ भाग्य का दीपक अखंड, अटल, निर्विघ्न रूप से २५०० वर्ष तक जलता रहता है।

(१) **तन्दुरुस्ती**—शिवबाबा ने बताया है कि आत्मा को प्रकृति के पांच तत्वों के बने हुआ इस चैतन्य पुतले की जरूरत पड़ती है। सारथी आत्मा रथी बन करके इस पार्थिव तन में प्रवेश करके इस तन को अरथी से सारथी बनाती है। तनदुरुस्त रहे यह सबकी इच्छा है। शिवबाबा ने तनदुरुस्ती का आधार आत्मा की शक्ति है, शक्तिवान आत्मा को शक्तिवान, तनदुरुस्त, सौन्दर्यवान शरीर मिलेगा—ऐसा बताया है। इसीलिए दीर्घायु--यह सौभाग्य की निशानी मानी गई है।

जिस समाज में व्यक्ति की औसत आयु १५० वर्ष हो अर्थात् इतने तक तनदुरुस्त शरीर हो और

अन्त में स्वेच्छा मृत्यु प्राप्त हो, ऐसी स्थिति को शिवबाबा ने सर्वश्रेष्ठ तनदुरुस्त की कल्पना हमारे सामने रखी। आज के विज्ञान ने भी यह माना है कि हरेक व्यक्ति के पास, स्थूल तन के साथ-साथ एक विशेष तेजोमय आकारी शरीर भी है। उस आकारी शरीर की प्रतिभा तथा उसमें छिपे हुए मलीनता के आधार पर तन में कहां पर बिमारी है यह सिद्ध करने का प्रयास किया है।

तनदुरुस्ती का आधार है आत्मा की शक्ति और इस आत्मिक शक्ति की जागृति करना यह भी एक प्रकार का भाग्योदय है। शिवबाबा ने यह भी बताया है कि भक्तिमार्ग में अस्पताल आदि दान के द्वारा बनाने वाले को प्रारब्ध में अच्छा तन मिलता है अर्थात् तन की दुरुस्ती का सम्बन्ध भाग्य के साथ है। एक हस्तरेखा शास्त्री ने बताया है कि सबसे पहले और ज्यादा से ज्यादा लोग आयु के बारे में ही प्रश्न पूछते हैं कि कितना समय तक वह व्यक्ति जीवित रहेगा। यह बात भी सिद्ध करती है कि भाग्य की रेखाएं और आयु के बीच में बहुत ही घनिष्ठ सम्बन्ध है।

(२) **मन की खुशी**—मन आत्मा के अन्तर्गत होते हुए भी मन की खुशी के बारे में विशेष विचार करना जरूरी है क्योंकि मन को आस्तिक, नास्तिक सभी मानते हैं। अनेक नास्तिकों से मैंने यह प्रश्न पूछा है कि जब आप कहते हो कि मैं खुश हुआ तो कौन खुश हुआ? परन्तु आत्मा को न जानने के कारण वे बता नहीं सकते कि कौन खुश हुआ। खुशी यह भी एक खुराक है और योग के द्वारा सदा हर्षितमुखता के लक्षण धारण होते हैं। हर दिन, हर घड़ी शुभ बातों का सूचक है—ऐसा मानकर चलने से ही सदा मन की खुशी रहेगी। सदा खुश रहने के लिए शिवबाबा ने बताया है कि बीती हुई बातों को स्वप्न में भी याद मत करो और जो ऐसे पास्ट की बातों को समाप्त करेंगे उनके ही नये जीवन में नया उमंग और नया उत्साह सदा बना रहेगा। खुशी के लिए आज की दुनिया में लोग जितने भी प्रयत्न करते हैं वह सब अल्प काल की खुशी देते हैं। शाश्वत खुशी का आधार क्या है यह रहस्य सिर्फ भाग्य विधाता शिवबाबा ही बताते हैं क्योंकि श्रेष्ठ भाग्य माना ही सदा खुशियों का अपार खज़ाना। तो मन की खुशी अर्थात् अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति वर्तमान में होने से ही नई दुनिया में सर्वश्रेष्ठ इन्द्रिय सुख और उनके द्वारा खुशी प्राप्त होगी। खुदा से खुशी का भंडार अब हम सब भर रहे हैं। इस प्रकार इस ईश्वरीय ज्ञान को, मन की खुशी के कारण मनोवैज्ञानिक (Psychological) तरीके से शिवबाबा हम बच्चों को सिखलाते हैं।

(३) **धन की समर्थी**—आज के विश्व में निर्धनता एक बहुत बड़ी जटिल समस्या है। विश्व में अन्तिम क्रांति धनी और निर्धन व्यक्ति के बीच में होगी ऐसा भविष्य कार्लमार्क्स ने बताया है। धन के साथ-साथ धन की समर्थी का भी बहुत बड़ा प्रश्न है। धन होते हुए भी धन में समर्थी न हो तो धन का कोई उपयोग नहीं। पिछले विश्व युद्ध के बाद जर्मनी की सरकार ने इतने कागजों के नोट छाप दिये कि वहां पर सभी करोड़पति बन गये। फलतः धन में कोई समर्थी नहीं रही। कहते हैं कि वहां लोग टोकरी भरकर कागज के नोट ले जाते और थैली भरकर सब्जी लेकर आते थे। अर्थात् धन की समर्थी खत्म हो गई थी। आज भी भारत में २५ साल पहिले का एक रुपये का मूल्य या खरीदशक्ति १० पैसे जितनी भी नहीं रही ऐसा अर्थशास्त्री कहते हैं। जितनी-२ मंहगाई बढ़ती जायेगी उतनी-उतनी धन की समर्थी कम होती जायेगी। धन विहीन मनुष्य समाज की शांति के लिए एक प्रश्न है और इसीलिए सतयुग के बारे में शिवबाबा ने बताया है कि हरेक मनुष्य के पास उसकी जरूरत से भी कई गुना ज्यादा धन होगा अर्थात् सतयुग में धनी और निर्धन का कोई प्रश्न ही नहीं रहेगा। समाज के हरएक व्यक्ति के पास कम से कम उसकी जरूरत से अनेक गुणा ज्यादा धन होगा, यही सिद्ध करता है कि सामाजिक भाग्य भी धन की दृष्टिकोण से श्रेष्ठ होगा।

धन अर्थात् सम्पत्ति रूपी भाग्य के बारे में सदा ही सर्व चिंतित रहते हैं और उसमें एक बात लोग कई बार पूछते हैं कि यह धन आपकर्मी है या बाप-कर्मी है। सतयुग वह समाज है जहां पर पारलौकिक

बाप से कर्मों के द्वारा प्राप्त ज्ञान और योग के आधार पर आत्मा आपकर्मी बन करके अपना श्रेष्ठ भाग्य बनाती है अर्थात् वर्तमान समय बाप जो ज्ञान धन देते हैं उसको धारण करके हरेक आत्मा जितना चाहे उतना धन सम्पन्न बन सकता है। मातेश्वरी जी हमेशा कहती थीं कि बख्तावर बाप अभी बख्त बांट रहे हैं और इसी समय पर जो अपना भाग्य नहीं बनाते हैं वह सब हैं 'कमबख्त'।

(४) **सम्बन्ध में सन्तोष**—सम्बन्ध के आधार पर कुटुंब, समाज, देश और विश्व सब बातें संबंधित हैं। संबंध के आधार पर संस्कृति का विस्तार भी होता है। आज भी दैवी संबंध के आधार पर दैवी परिवार की रचना होती है और इस दैवी परिवार द्वारा एक विशेष प्रकार का संतोष प्राप्त होता है। एक विदेशी भाई ने संबंध से प्राप्त संतोष के बारे में अपने अनुभव में बताया कि वह मधुबन में इसलिए आता है कि यहां पर दैवी परिवार से संबंध जुटता है, स्नेह जुटता है और इस स्नेह से प्राप्त संतोष के आधार पर एक ऐसा सुख अनुभव होता है जो हमें विदेश से मधुबन खींचकर लाता है। यह संतोष और सुख ऐसा विशेष संतोष और सुख है जिसकी कल्पना विश्व में अन्य कहीं भी नहीं हो सकती। पश्चिम की दुनिया में आज भी समाज में कई प्रकार के अपराध प्रवृत्ति (Criminal action) वाले बच्चे हैं और इसका कारण वह बताते हैं कि उन्हें कुटुम्ब का प्यार नहीं मिला है। यदि कुटुम्ब से प्यार और संतोष मिलता तो वह व्यक्ति कभी भी अपराध नहीं करता।

संतोष के बारे में जब हम सोचते हैं तब तीन बातें सामने आती हैं। (१) सम्बन्ध में स्नेह, (२) सम्बन्ध से मोह, (३) सम्बन्ध में वासना। वासना और मोह दुःखों के निमित्त हैं। इसी कारण द्वापर में सन्यासियों ने घरबार का त्याग किया। सतयुगी सर्वश्रेष्ठ भाग्यवान आत्माओं को घरबार का सन्यास नहीं करना पड़ता क्योंकि उनके आपसी संबंधों में मोह या वासना रूपी कामना नहीं थी। देवताओं और सन्यासियों के सुख रूपी भाग्य में यही फर्क है कि देवताओं के भाग्य में संबंधों में संतोष का सुख है और सन्यासियों के भाग्य में संबंधों के सुख का त्याग है। देवताओं के घर-घर में संबंधों का सुख था इसलिए तो वह स्वर्ग है। अगर संबंधों का सुख नहीं हो तो महल भी जेल बन जाए। इसी प्रकार से साधनों से भी संतोष मिलना यह एक बड़ी बात है। आज के विश्व में साधन के द्वारा अनेक प्रकार के सुख भी हैं तो साथ-साथ दुःख भी हैं। सतयुग में साधन तथा उसी साधनों से प्राप्त संबंध और सुख में सदा संतोष रहता है।

(५) **सम्पर्क में सफलता**—मनुष्य इसलिए कार्य अर्थ जो भी पुरुषार्थ करता है उसी के कारण औरों के सम्पर्क में आता है। सम्पर्क में सफलता प्राप्त रहे यह भी एक भाग्य की निशानी है। उदाहरणार्थ कई लोग धंधा करते हैं। धंधे में सफलता मिलेगी या नहीं, इस बात के भाग्य को जानने के सदा उत्सुक रहते हैं। सम्पर्क में आने वालों को हम सदा संतोष दें यह भावना भी सबकी रहती है। जैसे नदी किनारे पर रहने वालों की प्यास बुझाती है, एक वटवृक्ष छांव में बैठने वालों को गर्मी के समय पर शीतलता देता है ऐसे ही मनुष्य अपने आपको इतना विस्तृत बनाना चाहता है कि उसकी शीतल छाया रूपी सम्पर्क में आनेवाले सर्व सदा सुखी और सन्तुष्ट रहें। सुख, संतोष और सफलता की प्राप्ति सदा रहे यह हरेक मनुष्य की अभिलाषा रहती है।

इस प्रकार इन ऊपरलिखित बातों के आधार पर भाग्य का विचार करें तो सिर्फ सतयुगी भाग्य की बात नहीं लेकिन द्वापर के गायन और पूजन के भाग्य की बात भी इसमें समा जाती है। भाग्य के आधार पर, भाग्यदाता, भाग्य विधाता परमात्मा भी सिद्ध हो जाता है और यह भाग्य का उदय हरेक के अपने २ पुरुषार्थ के आधार पर होता है। इसी लिए सतयुग के कम भाग्य वालों को ज्यादा भाग्य-वालों की इर्ष्या उत्पन्न नहीं होती परन्तु मान-सम्मान की भावना उत्पन्न होती है। आज के विश्व में निर्धन को धनी के प्रति, भाग्य को न जानने के के कारण, घृणा और ईर्ष्या उत्पन्न होती है। सतयुग में यही भाग्य की बात बीच में आती है इसलिए कम भाग्यवालों को श्रेष्ठ भाग्यवालों के प्रति ईर्ष्या और द्वेष उत्पन्न नहीं होता क्योंकि वहां के कम

(शेष पृष्ठ २८ पर)

मंगलूर की वहन ब्र० कु० शकुन्तला मुडविद्री से विधान सभा सदस्य भ्राता के अमरनाथ को ईश्वरीय उपहार भेंट करते हुए।

अम्मणगी गांव में ब्र० कु० महादेव ईश्वरीय सन्देश देते हुए।

भोपाल-पिपलानी में राजयोग प्रदर्शनी के उद्घाटन के पश्चात् बी० एच० ई० एल० के उप महाप्रबन्धक भ्राता इन्तजार हुसैन को समझाते हुई बहन रीना जी।

राजकोट स्थित ताज कान्फेंस हाल में आयोजित दिव्य सम्मेलन में भ्राता डी० के० धगल, उप-चुनाव कमिश्नर अपने विचार प्रकट करते हुए। मंच पर (बाएं से) ब्र० कु० मुलजी भाई, भ्राता हरेश भाई तथा ब्र० कु० भारती बैठे हैं

कासरगढ़ (केरला) में हुए विश्व शान्ति तथा विश्व भ्रातृत्व आध्यात्विक प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर प्रवचन करते हुए अच्युतन नेयर जी।

भोपाल गोबिन्दपुरा में राजयोग प्रदर्शनी के चित्रों की व्याख्या भ्राता कृष्णामूर्ति, महाप्रबन्धक (राजस्व) बी० एच० ई० एल०, ब्र० कु० अवधेश से सुनते हुए।

"रोज मालिकम् सलाम कहते है"

अवधेश नन्दन कुलश्रेष्ठ, एम० ए०, उत्तराकाशी)

अमृतवेला में एक अनुभूति

हृदय से स्वतः प्रस्फुटित शब्दों को अनुभूतिगम्य हृदय ही समझ सकता है। आन्तरिक सामान्य अवस्था में जो वाक्य सामान्य लगते हैं वह सूक्ष्म, अव्यक्त व लवलीन अवस्था के क्षणों में बड़े राज़ भरे, तासीर भरे, भावनाओं का सम्पूर्ण साक्षात्कार कराने वाले और हृदय को संतृप्ति (Saturation Stage) का अनुभव कराकर बड़ी ही स्वाभाविक व गुप्त 'वाह वाह' व 'धन्य-धन्य' के गीत उडेलने वाले होते हैं।

इस समय अमृत वेला का पौने तीन बजा है। आज रात्रि १२ बजे से ही विशेष याद की यात्रा की है और सवा दो बजे अव्यक्त वाणी की पुस्तक से दि० १८-१-८१ की अव्यक्त बाप दादा की मुरली पढ़ी। पृष्ठ दस की चौथी पंक्ति के ये शब्द, "रोज़ मालिकम् सलाम करते हैं" पढ़कर हृदय बाप के प्यार की गहराई से उद्वेलित हो उठा। अचानक एक सिहरन सारे बदन में अनुभव हुई। इतने ही शब्दों को बार-बार पढ़ने, देखने को मन करता रहा। कुछ देर एक टकटकी लगाये पुस्तक में इन शब्दों को देखता रहा और फिर शब्दों ने मानस पटल पर बाप के साकार स्वरूप के करुण दृश्य के माध्यम से कुछ स्वाभाविक मनन का क्रम उत्पन्न किया। मनन के कुछ ही क्षणों बाद पुस्तक में इन शब्दों के पूर्व के एक दो वाक्य पढ़ने की दिल हुई जो पाठकों के सुगम सन्दर्भ हेतु इस प्रकार हैं,

"भक्त भगवान के आगे परिक्रमा लगाते हैं लेकिन भगवान अब क्या करते हैं ? भगवान बच्चों के पीछे परिक्रमा लगाते हैं। आगे बच्चों को करते पीछे खुद चलते हैं। सब कर्म में चलो बच्चो—चलो बच्चो कहते रहते हैं। यह विशेषता है न ! बच्चों को मालिक बनाते और, स्वयं बालक बन जाते, इसलिए रोज़ मालिकम् सलाम कहते हैं"

पुनः पढ़कर साकार बाप का सम्पूर्ण स्वरूप सामने आ गया और सैकण्ड में अतीत के सारे साकार चरित्र सूक्ष्म मनसा में घूम गये और लगा कि भोले बाबा सामने बैठे यह शब्द उच्चारण कर रहे हैं। बालक, मालिकपन के मिश्रण की एक अनौखी भाव भंगिमा पर मनन के फल स्वरूप इन शब्दों में निम्न अन्तर्भावनाओं का मूर्तरूप (Emotions personified) देखा:...

१. बापदादा का बच्चों के प्रति **परम वात्सल्य।**

२. बाप दादा का बच्चो की संगमयुगी व सतयुगी प्रारब्ध का स्वरूप मन में संजोये बच्चों के प्रति **परम आदर**

३. बाप दादा का बच्चों के वर्तमान अलबेलेपन व भविष्य में आने वाली विश्व स्तर की जिम्मेवारी देखकर बच्चों के प्रति **परमघनीभूत रहम** अथवा तरस।

४. बाप दादा द्वारा बच्चों के पुरुषार्थ को अपनी शक्ति से एकदम उड़ती कला का बना देने की प्रबला इच्छा किन्तु 'जैसा कर्म वैसा फल' स्वयं के इस विधान में स्वयं बंधा होने के कारण गुप्त मीठी अलौकिक छटपटाहट सी अथवा गुप्त **परम मजबूरी**

इन चारों ही भावनाओं के समिश्रणयुक्त बाबा का परम टीस भरा स्वरूप अभी भी सामने है। कहाँ भक्तों का दीन हीन भिखारी स्वरूप (तू दयाल, दीन हों, तू दानी है मैं भिखारी) का अपने में आरोपन कर प्रभु से याचना करना और कहाँ उस सर्वशक्तिवान का बाप के रूप में आकर हम बच्चों से तीव्र पुरुषार्थ का परम दर्दभरा आग्रह अथवा याचना सी।

उपरोक्त उल्लिखित वाक्य वैसे कोई पहली बार ही नहीं पढ़े हैं। किन्तु आज यह शब्द इतने प्यार भरे लग रहे हैं और इन शब्दों के प्रति बड़ी ही रागात्मक आसक्ति सी पैदा हो रही कि··· विश्व···का मलिक··· (सर्वशक्तिवान)···रोज··· मालिकम् सलाम करे ! बाप के सामने हमारा सजा सजाया देवताई प्रारब्ध स्वरूप सामने है जिस स्वरूप को देख बाप, बच्चों की शान सो बाप की शान

(शेष पृष्ठ २३ पर)

अनोखी सीट

(ब्र० कु० ज्योति, रायगढ़)

आप सोचते होंगे ये अनोखी सीट कौन-सी है ? आज तक तो हमने कई सीटों के नाम सुने है प्रधानमंत्री की सीट, न्यायाधीश की सीट, राष्ट्रपति की सीट आदि-आदि। हम देखते हैं जब भी चुनाव होते हैं तो नेता लोग सीट लेने के लिये कितनी मेहनत करते हैं, कितना खर्च करते हैं, कितना टाईम वेस्ट करते हैं यहां तक कि आज तो हम देखते हैं कि चुनाव के समय कई जगह इतने झगड़े हो जाते हैं जो हमेशा के लिये आपस में दुश्मनी हो जातो है। फिर भी राज्य मिलता है अल्पकाल का, और उस सीट को लेने के बाद भी शायद ही कोई उस सीट पर बैठकर सुख चैन से रहता है।

लेकिन एक सीट ऐसी भी है जिसे लेने में न कोई खर्च है न कोई मेहनत। बल्कि उस सीट को तो लेने से हम सदा के लिये सारी चिन्ताओं से, विघ्न बाधाओं से, परिस्थितियों, समस्याओं से मुक्त हो जाते हैं। ये सीट ऐसी है जिसे लेने से हम अभी भी सुख शान्ति सम्पन्न बेफिकर बादशाह बन जाते हैं तो भविष्य जन्म-जन्मान्तर के लिये भी सुख शांति सम्पन्न विश्व महाराजन् विश्वमहारानी बन जाते हैं।

आप सोचते होंगे ये सीट कौनसी है जिसे लेने में मेहनत कुछ नहीं और प्राप्ति इतनी ऊँची ? ये सीट किसके द्वारा मिलती होगी ? ये सीट देने वाला हम सभी आत्माओं का पिता परमात्मा है। वही पिता परमात्मा कलियुग अन्त और सतयुग आदि के इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर आकर हम आत्माओं को ये सीट देते हैं। इस सीट को लेने के लिये बस अपने को आत्म निश्चय कर इस मनुष्य सृष्टि रूपी ड्रामा में पार्टधारी समझना है। जैसे हम कोई नाटक देखते हैं तो नाटक में हरेक एक्टर अपना-अपना पार्ट अदा करता है। किसी का लड़ाई का पार्ट होता है, किसी का दुख का पार्ट होता है, कभी नाटक में बाढ़ तूफान के सीन आते हैं, लेकिन उस समय हम क्या करते हैं। अपनी सीट पर बैठे नाटक देखते हैं और मनोरंजन अनुभव करते हैं तो जैसे उस नाटक को देखने से मनोरंजन होता है वैसे ही इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर हम सभी आत्माएं भी पार्टधारी हैं। हरेक आत्मा अपना पार्ट बजा रही है तो वैसे ही हम हरेक आत्मा के पार्ट को भी साक्षी भाव से नाटक समझ देखें।

वैसे ही मान लीजिये अगर किसी नाटक में आपने दुख का पार्ट अदा किया है फिर उसी नाटक की फिल्म आपको दिखाई जावे तो आपको देखकर खुशी होगी न कि दुख। आप अपने पार्ट को भी साक्षी भाव से देखेंगे कि मैंने किस तरह पार्ट बजाया है। ये स्मृति अगर हमें हमेशा रहती है कि हम तो सिर्फ इस सृष्टि रूपी रगमंच पर पार्ट बजा रहे हैं, तो हम स्वयं के ओर सर्व आत्माओं के पार्ट को साक्षी हो देखेंगे। और आये हुए विघ्न, बाधाओं, समस्याओं को खेल की तरह पार कर लेंगे। तो यही साक्षीपन की सीट इस संगमयुग पर परमात्मा आकर हमें आत्माओं को देते हैं। जो आत्माएं इस साक्षीपन की सीट पर बैठकर हरेक आत्मा के पार्ट को देखती हैं वे हर परिस्थिति में एकरस रहती हैं और वही आत्माएं आने वाली नई सतयुगी दैवी दुनिया में विश्व महाराजन् विश्व महारानी के रूप में प्रसिद्ध होती हैं।

"रोज मालिकम् सलाम कहते हैं"

(पृष्ठ २२ का शेष)

अथवा सन शोज़ फादर (Son Shows Father) की शिक्षा के सम्पूर्ण धनत्व का अहसास भी इन शब्दों द्वारा करा रहा है। आज रियलाइज हो रहा है कि लम्बे काल की अव्यक्त स्थिति महावाक्यों को कितना विशाल (Magnified) करके सामने लाती है। अनेक भावों के भावातिरेक में अब लेखनी की गति भावों के सामने बहुत धीमी लग रही है··· अवस्था बापमय अनुभव हो रही है।

शक्तिनगर देहली सेवा केन्द्र द्वारा आयोजित समयपुर गांव में आध्यात्मिक कार्यक्रम में उपस्थित जनता का समूह। ब्र० कु० त्यागी जी प्रवचन करते हुए।

गांधीनगर (गुजरात) सेवाकेन्द्र द्वारा आयोजित विश्व शांन्ति प्रदर्शनी उद्घाटन पश्चात् भ्राता बालाकृष्णन, सचिव राजस्व विभाव गुजरात, ब्र० कु० कैलाश से चित्रों की व्याख्या सुनते हुए।

ब्र० कु० जगरूप, भ्राता दर्शनकुमार बहल कार्यकारी पाषर्द को कृष्णानगर देहली में आयोजित चरित्र निर्माण प्रदर्शनी के चित्रों की व्याख्या करते हुए।

रगंज (नेपाल) में तराई विभाग की सब से बड़ी जेल कैदियों के समक्ष प्रवचन करती हुई ब्र० कु० शीला ी। कैदी बढ़े ध्यानपूर्वक सन्देश सुनते हुए।

नाटक

'सच्चा प्यार'

(ब्रह्माकुमारी मीनाक्षी, चण्डीगढ़)

पात्र

मीना—मैट्रिक की स्टूडैन्ट, कमला—आधुनिक एवं फैशनयुक्त मीना की माँ, मुन्नीलाल—मीना के पिता, रामू—५० वर्षीय नौकर, ड्राईवर ब्रह्माकुमारी तथा सखियाँ

स्कूल में छुट्टी की घंटी बजी, सारे स्कूल में शोर के वातावरण के साथ बहुत-सी लड़कियों का झुण्ड बाहर निकला और मीना भी हाथ में किताबें लिये हुए अपनी सहेलियों के साथ बाहर निकली। जैसे ही गेट पर पहुँचती है, ड्राईवर पहले से मीना की इतंज़ार में खड़ा था। मीना अपनी सहेलियों से छुट्टी लेती हुई गाड़ी में बैठ गई।

सखियां : (आपस में बातें करती हुई) अरे वाह ! कितनी अच्छी मीना की किस्मत है। रईस बाप की इकलौती बेटी है। पढ़ाई में भी कितनी होशियार है। ऐसी किस्मत तो किसी-किसी की होती है।

मीना गाड़ी में बैठी सोच रही है कि हरेक के सामने मेरा जीवन बहुत सुखी है परन्तु मैं समझती हूँ कि मेरे जैसा दुःखी कोई नहीं। ड्राईवर गाड़ी को बहुत ही सुन्दर आलीशान कोठी के आगे खड़ी करता है। नीचे उतर कर गाड़ी का दरवाज़ा खोलता है। मीना किताबें सम्भालती हुई नीचे उतर जाती है और कोठी के अन्दर प्रवेश करती है। रामू मीना को देखकर भागते हुए आता है और उससे किताबें लेकर एक कमरे में रख आता है।

मीना : मम्मी कहाँ है।

रामू : बिटिया, मेमसाहब तो मिसेज़ वर्मा के घर गई हैं।

मीना : (गुस्से से) ओहो, सहेली-सहेली जब भी देखो मम्मी हर समय कहीं न कहीं घर से बाहर होती। अच्छा पापा कहाँ है ?

रामू : हिचकचाते हुए, जी, साहिब तो आज ही अपने काम से कलकत्ता गये हैं।

मीना : बस। पापा को अपने काम से फुर्सत नहीं। मम्मी को घूमने के सिवाए कोई काम नहीं और एक मेरा किसी को हाल तक पूछने की फुर्सत नहीं। आखिर मैं माँ-बाप का प्यार लेने के लिये कहाँ जाऊँ ?

रामू : बिटिया, खाना लगा दिया, आप खाना खाओ और भगवान के गुण गाओ। बिटिया, ज्यादा मत सोचो। ज्यादा सोचने से मन और ही अशान्त हो जाता है। बेटा, इसी में ही खुश रहो, भगवान ने तुझे इतने सुख दिये हैं, यह सब कुछ आपका ही है।

मीना : रामू काका। तुम ठीक कहते हो कि घर में सब प्रकार के सुख के साधन हैं परन्तु इनमें सच्चा प्यार नहीं, इनसे मुझे मानसिक प्यार नहीं मिल सकता। जो सच्चा लाड प्यार माँ बाप कर सकते हैं, वह इन पदार्थों में कहाँ है। बस मुझे कुछ नहीं चाहिये, केवल सच्चा प्यार चाहिये।

इन्हीं विचारों में अपने कमरे में जाकर लेट जाती है और खोई हुई उसे न जाने कब नींद आ जाती है।

"दूसरा दृश्य"

रामू : उठो बिटिया उठो। बहुत समय हो गया है सोए हुए।

मीना : (उठकर बैठ जाती है) रामू काका, माँ नहीं आई ?

रामू : नहीं बिटिया, उनका फ़ोन आया था कि मैं उधर से ही कलब में चली जाऊँगी। बिटिया चाय लाऊँ ?

मीना : हाँ।

मेज पर किताबों का ढेर लगा हुआ है, मीना कुर्सी पर बैठी संस्कृत की किताब उठाती है। इतने में चाय आ जाती है। मीना खामोश सी बैठी चाय पी रही है और संस्कृत का श्लोक पढ़ रही है—"त्वमेव मातः श्च पिता त्वमेव"। मन ही मन सोचती भगवान तुम्हीं मात पिता हो परन्तु तुम्हारा प्यार भी कैसे पा सकती हूँ, बस मुझे आपका ही प्यार मिल जाए। इतने में घंटी बजती है।

मीना : देखो रामू काका, कौन आया है ?

रामू : डाकिया डाक लाया। और टेबल पर रख चला जाता है।

मीना पोस्ट को देखती है तो एक बहुत सुन्दर चमकता हुआ उसे कार्ड दिखाई देता है और उसे उठा कर देखती और पढ़ती "ईश्वरीय निमन्त्रण"। उस कार्ड को देख कर ईश्वर ने मिलने के लिये मुझे निमन्त्रण दिया है ! मैं उसे जरूर मिलूँगी। कल ५ बजे प्रोग्राम है, मैं जरूर जाऊँगी।

टन-टन, बाहर घंटी हो रही है।

रामू : मेम साहिब आ गई हैं।

मीना दौड़कर माँ के पास जाती है। माँ-माँ, आवाज़ देती है।

माँ : मीना, तुम आ गई ?

परन्तु वह शराब के नशे में खुद पड़ी है और उसके मुख से शराब की दुर्गन्ध फैलती हुई सारे कमरे को दूषित कर रही है।

मीना (अपने आप से) यह भी क्या जीवन है ! जिस घर में मां शराब और घूमने में मस्त रहती है। पापा को अपने काम से फुर्सत नहीं मिलती। उस घर का और बच्चों का क्या हाल होगा ! मैंने बचपन से ही ऐसा घर का वातावरण देखा है, फिर भी मुझे यह ऐश्वर्य का जीवन पसन्द नहीं है। यही सोचते-सोचते उसका ध्यान फिर ईश्वरीय निमन्त्रण पर चला जाता है और सोचती है मैं पापा को भी कहूँगी कि ईश्वरीय निमन्त्रण को स्वीकार करें परन्तु क्या उन्हें फुर्सत होगी ? नहीं, नहीं, मैं उन्हें ज़रूर ले चलूँगी। इन्हीं विचारों में खोए-२ उसे नींद आ जाती है।

"तीसरा दृश्य"

सुबह के ७ बजे हैं, मीना स्कूल जाने के लिये तैयार हो रही है। मुन्नीलाल अपने कमरे से मीना को आवाज़ लगाते हैं।

मीना : आई पापा। कहकर कमरे में प्रवेश करती हुई कहती—पापा, गुडमार्निंग पापा, आप कब आये ?

मुन्नीलाल : गुडमार्निंग बिटिया। कहो क्या हाल है। सब ठीक है। किसी चीज़ की ज़रूरत तो नहीं। कोई बात हो तो कह सकती हो।

मीना : हाँ, पापा ठीक है। हिचकचाती हुई। नहीं कोई बात नहीं। हाँ, कल पापा प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से हम सबके लिए एक कार्ड आया था। जिस पर लिखा था "ईश्वरीय निमन्त्रण"। पापा, आप जायेंगे तो मुझे ज़रूर अपने साथ लेकर जाना। आज शाम को ५ बजे वहाँ फंक्शन है।

मुन्नीलाल : हूँ। बेटा, हमको फुर्सत कहाँ, इस निमन्त्रण को स्वीकार करने की।

मीना : परन्तु पापा, आप बाकी निमन्त्रण तो बड़ी खुशी से स्वीकार करते हो परन्तु ईश्वरीय निमन्त्रण को अस्वीकार क्यों ?

मुन्नीलाल : इतना सुनते ही उनकी आँखें गुस्से से लाल हो जाती हैं। मीना, छोटा मुंह बड़ी बात करना तुमने कहाँ से सीखा। आपको इतने मैनर्स नहीं कि बड़ों से कैसे बात की जाती है।

मीना सिर नीचे किये हुए कमरे से बाहर चली जाती है और इतने में ड्राईवर गाड़ी लेकर आता है। मीना उसमें बैठ जाती है और कुछ सोच रही है। ईश्वरीय निमन्त्रण को स्वीकार करने की फुर्सत नहीं। यह आवाज़ उसके कानों में बार-बार गूँज रही है। (अपने आप से) ठीक है। मैं अकेले ही जाऊँगी क्योंकि ईश्वरीय प्यार की मुझे ज़रूरत है। (ड्राईवर को कार्ड दिखाते हुए) यह ब्रह्माकुमारी आश्रम कहाँ है ?

ड्राईवर : यही पास में है, १० मिनट का रास्ता है।

मीना : ठीक है। शाम को जब मुझे स्कूल से छुट्टी होगी तो फिर सीधा ही मुझे वहाँ ले चलना क्योंकि ५ बजे स्कूल में छुट्टी होती है और ५ बजे ही फंक्शन का टाईम है।

ड्राईवर : ठीक है। मैं शाम को आपको वहीं ले चलूंगा।

मुन्नीलाल अपने आफिस में बैठा हुआ कुछ सोच रहा है। आज उसे बार-बार मीना की आवाज़ कानों में सुनाई दे रही है। ईश्वरीय निमन्त्रण अस्वीकार क्यों ? (अपने आप से) नहीं, नहीं, मैं आज ईश्वरीय निमन्त्रण को ज़रूर स्वीकार करूँगा। मैं सब काम छोड़कर ज़रूर जाऊँगा। नहीं-नहीं, मैं अकेला ही नहीं मीना और कमला को भी अपने साथ ले जाऊँगा। हो सकता है मुझे ईश्वर पिता के घर से मानसिक सुख शान्ति की प्राप्ति हो जाए। मुझे नई राह मिले।

टन-टन ५ के घंटे बजे। मुन्नी लाल जल्दी-जल्दी से उठ कर घर की ओर जाने के लिये गाड़ी को स्टार्ट करता है। कुछ ही समय में घर पहुँच जाता है और आवाज़ लगाता है कमला, ओ कमला।

कमला : हां जी। आप आ गये।

मुन्नीलाल : हां जल्दी से तैयार हो जाओ। ब्रह्माकुमारी आश्रम में ५ बजे फंक्शन है, वहाँ हम तीनों जायेंगे। तुमको मेरे साथ अभी चलना है।

कमला : (जल्दी से तैयार होकर आती है) कहती है मीना तो अभी स्कूल में ही है।

मुन्नीलाल : कोई बात नहीं, उसे स्कूल से ही ले लेंगे।

मुन्नीलाल और कमला गाड़ी में बैठ जाते हैं और कुछ समय गाड़ी स्कूल के आगे मीना को लेने के लिये खड़ी करते हैं।

मीना पहले से इन्तज़ार में खड़ी थी लेकिन मम्मी पापा को देखकर कुछ सहम जाती है।

मुन्नीलाल : आओ बेटे। मीना, हमने आपकी बात मान ली और मैं अकेला ही नहीं हम तीनों सेवाकेन्द्र पर जा रहे हैं।

मीना : सच !

इतना कह कर वह गाड़ी में खुशी से बैठ गई। आज उसका मन खुशी से नाच रहा है कि एक तो माता-पिता के साथ और दूसरा ईश्वर पिता का सच्चा प्यार पाने के लिये उस राह पर जा रही है। गाड़ी एक बहुत ही सुन्दर शान्ति का वातावरण जहाँ चारों ओर फैल रहा है, वहाँ खड़ी होती, जहां बहुत सुन्दर और बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा है "प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय"। तीनों गाड़ी से उतरकर आश्रम में प्रविष्ट होते हैं।

ब्रह्माकुमारी बहन उन्हें बहुत सुन्दर हाल में ले जाती है जोकि श्वेत चादरों से सजा हुआ है। स्टेज पर कुछ भाई बहनें बैठे हैं। श्वेत वस्त्रधारी ब्रह्माकुमारी बहन प्रवचन कर रही है। मुन्नीलाल आश्चर्य से चारों ओर देखता है।

कमला : (अपने आप से)। आज तक इतनी पार्टी, इतने फंक्शन देखे परन्तु इस जैसा शान्ति का वातावरण कहीं नहीं देखा।

ब्रह्माकुमारी : आज मैं आपको उस परम प्यारे परमपिता का परिचय दूंगी। परमपिता परमात्मा को आज हरेक मनुष्यात्मा उनको परमपिता कह कर याद करती है। परन्तु आज मनुष्यात्माओं को परमात्मा का वास्तविक परिचय न होने के कारण ही परमात्मा पिता से सुख शान्ति की प्राप्ति करना चाहते हुए भी वह नहीं कर पाते क्योंकि जब तक उसका परिचय नहीं, स्मृति नहीं, तो प्राप्ति नहीं। प्राप्ति करने के लिये परमपिता परमात्मा का परिचय होना अति आवश्यक है। परमपिता परमात्मा का वास्तविक नाम "शिव" है। पिता होने के कारण हम उन्हें स्नेह से "बाबा कहते हैं। परमापिता परमात्मा का रूप ज्योति-बिन्दू है। परन्तु वह हैं गुणों के सिन्धु। परमात्मा पिता ही ज्ञान के सागर, सुख के सागर, शान्ति के सागर, आनन्द के सागर हैं। परमपिता परमात्मा परमधाम के रहवासी हैं। जब हम आत्माएँ परमात्मा पिता को भूल कर भौतिक साधनों से सुख शान्ति, प्रेम प्राप्त करने के लिए जगह-जगह भटकती हुई अज्ञान अन्धकार में फंस जातीं तो परमपिता परमात्मा स्वयं साकार प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा अपनी सत्य पहचान देकर ही हम आत्माओं को सच्चा सुख, शान्ति, प्रेम, आन्नद की सत्य अनुभूति कराते हैं। जिससे हम आत्माएँ सच्चे पिता परमात्मा से सर्वसम्बन्ध जोड़कर उनसे ही हम सच्चा प्यार पाते वे सर्व के सच्चे-सच्चे मात-पिता हैं। परमशिक्षक, परमसतगुरु हैं। एक परमात्मा पिता से अविनाशी सम्बन्ध जोड़ कर ही हम मानसिक शान्ति की प्राप्ति कर सकते हैं और अपने जीवन को दिव्य गुणों से दिव्य बना सकते हैं। तो अभी हम तीन मिनट ईश्वरीय स्मृति मैं बैठेंगे और मन ही मन में परमपिता परमात्मा के गुणों का वर्णन कर उनकी स्मृति में बैठेंगे। रिकार्ड बजता है "अन्धियारे सभी मिट गये, उजियारा आ गया, ज्ञान सूर्य फिर से प्रकटा, शिव प्यारा आ गया"। इसी के साथ आज का कार्यक्रम समाप्त होता है। सभी उठकर चले जाते हैं। वह तीनों भी अपने घर चले जाते हैं।

मुन्नीलाल : (अपने आप से) "ओहो" आज तक मैंने जीवन भर भौतिक साधनों को इकट्ठा करने में लगा दिया। फिर भी मैं सच्चे सुख शान्ति की प्राप्ति न कर सका। और मैंने कुछ समय में ही आज ईश्वर पिता के परिचय से ही अपने जीवन में भरपूरता और धन्य अनुभव किया। आहा ! कितनी शान्ति का वातावरण। मीना को इस संसार में बैठी हुई भी ऐसा लग रहा था जैसे वह इस दुनिया से दूर शान्ति के सागर, प्रेम के सागर, आनन्द के सागर पिता परमात्मा से, सच्चे मात-पिता से सच्चे प्यार की अनुभूति कर रही है। उसकी आँखों से प्रेम के आंसू बह रहे हैं।

कमला : (मुन्नी लाल से) आज वहाँ पर जाकर मेरी तो आंखें ही खुल गईं। मैं तो समझती थी कि कलब आदि में जाना, घूमना—बस यही जीवन

है परन्तु इन श्वेत वस्त्रधारी ब्रह्माकुमारी बहनों का जीवन कितना दिव्य, कितना ऊँच है।

मीना : मम्मी, मैं भी इसी रास्ते पर चल कर और अपने जीवन को महान बनाकर अनेक आत्माओं का सम्बन्ध उस पिता परमात्मा से जुड़ा कर उनके जीवन में सच्चा प्यार, सुख, शान्ति की प्राप्ति स्वयं कर औरों को कराऊँगी।

मुन्नीलाल, कमला : बेटी, तुम्हारी इच्छा हम अवश्य पूरी करेंगे। हम तुम्हें ऐसा श्रेष्ठ जीवन बनाने के लिये पूरा-पूरा सहयोग देंगे। और हम भी अपने जीवन को दिव्य बनायेंगे।

गीत

ब्र० कु० रामकुंवर सिंह, प्रशासन अधिकारी, चन्द्रपुर

मेरे नयनों से शिव बाबा नज़र आते हैं।
खुशी और ज्ञान के भंडार दिये जाते हैं।
बाबा आये तो हमारी किस्मत बदली,
देहाभिमान भी गया, भक्ति ज्ञान में बदली।
नरक से स्वर्ग के आसार नज़र आते हैं,
मेरे नयनों से शिव बाबा नज़र आते हैं।

बाबा को पाके हमने भक्ति मार्ग छोड़ दिया,
आत्मा समझ के सब लौकिक नाते तोड़ दिया।
अब तो ब्रह्मलोक के निराकार नज़र आते हैं,
मेरे नयनों से शिव बाबा नज़र आते हैं।

कलियुग की अन्तिम घड़ी शिव से नाता जोड़ लिया,
परमपिता के दिव्य रूप ने जी मोह लिया।
अब ज्ञान-योग के दीदार नज़र आते हैं,
मेरे नयनों से शिव बाबा नज़र आते हैं।

आत्म-स्थिति की लाईट से मोह छोड़ दिया,
श्रीमत ने, समस्याओं का मुँह तोड़ दिया।
अब सम्पूर्ण बनने के आसार नज़र आते हैं,
मेरे नयनों से शिव बाबा नज़र आते हैं।

'बचाओ' और 'बच्चे आओ'

ब्र० कु० आत्म प्रकाश, आबू

इस सृष्टि चक्र में अन्तिम समय बहुत ही भयानक होगा। चारों ओर हाहाकार का हृदय विदारक दृश्य देखने वालों के भी दिल को शून्य कर देगा। कहीं भयानक तूफान होंगे, कहीं भीषण भूचाल तो कहीं गृहयुद्धों का ताण्डव नृत्य। मानव चीखेगा, उसका कोई भी सहारा नहीं होगा। तब असहाय नज़रों से वह प्रभु की ओर देखेगा। क्योंकि वही सबका अन्तिम सहारा है। मनुष्य चिल्लायेंगे कि हे भगवान "बचाओ"

और तब परमपिता कहेंगे "**बच्चे आओ**"। क्योंकि वह घर जाने का समय होगा। यह सृष्टि चक्र पूरा हो चूका होगा, सभी को ये तन छोड़कर परमात्मा के पास जाना होगा।

परन्तु कितनी भाग्यशाली हैं वे आत्माएँ जो आये हुए प्रभु से अपना नाता जोड़कर उससे सम्पूर्ण वर्सा ले रही हैं। और उन परम भाग्यशाली आत्माओं को अन्त में चिल्लाना नहीं पड़ेगा, वे सहज ही परमपिता के साथ मुक्तिधाम को लौट चली जाएंगी।

सतयुग—भाग्य और भाग्य-विधाता (पृष्ठ २० का शेष)

भाग्यवालों का भाग्य वर्तमान सृष्टि के भाग्यवालों के भाग्य से अनेक गुना ज्यादा होता है। वहां पर भाग्य के आधार पर प्राप्त एक आंतरिक संतुष्टता है जिस कारण समाज में सदा ही सुख और शांति रहती है। इस प्रकार सतयुगी सृष्टि को भाग्य और भाग्यविधाता के दृष्टिकोण से समझाने से भी अनेक आत्मायें आस्तिक बन अपने श्रेष्ठ भाग्य को बनाने के पुरुषार्थ में लग सकती हैं।

अन्न का मन पर और मन का अन्न पर प्रभाव

ले० ब्र० कु० व्ही जे० वराडपांडे, बिलासपुर (म० प्र०)

मनुष्य के आहार का उसके विचार और आचार के साथ गहरा संबंध है इसीलिए कहते हैं जैसा अन्न वैसा मन। तमोगुणी आहार से तमोगुणी विचार बनते हैं और सतोगुणी आहार से सतोगुणी विचार बनते हैं। योगी के लिए सतोगुणी आहार आवश्यक है।

सतोगुणी आहार की आवश्यकता

पांच विकार काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार ये आत्मा को लगे हुए रोग हैं जो उसे दुःखी बनाते हैं। जैसे शरीर के रोगों के लिये आहार संबंधी परहेज़ रखना होता है वैसे ही आत्मिक रोगी के लिये अर्थात् मनो विकारों से छुटकारा पाने के लिये आहार का परहेज़ रखना ज़रूरी है। आत्मिक स्थिति में रहने के लिये और मन परमात्मा से जोड़ने के लिए मानसिक स्थिति सतोगुणी होनी चाहिए और सतोगुणी मानसिक स्थिति के लिये आहार सतोगुणी होना चाहिए।

आत्मा मस्तिष्क के माध्यम से सुख-दुख भोगता है और कर्म करता है। मस्तिष्क शरीर का कन्ट्रोल रूम है और संदेश वाहक स्नायुओं तथा चालक स्नायुओं द्वारा शरीर के साथ उसका संबंध है। जो अन्न हम खाते हैं उसका प्रभाव मस्तिष्क पर पड़ता है और उसके द्वारा आत्मा पर पड़ता है। उत्तेजक पदार्थ खाने से मस्तिष्क में उत्तेजना पैदा होती है और इस प्रकार मन और बुद्धि भी उत्तेजित हो जाती है और इस उत्तेजना के फलस्वरूप मनुष्य के कर्म बिगड़ जाते हैं।

उत्तेजक, मादक, बासी, चटपटे, भारी, सड़े-गले पदार्थ तमोगुणी माने जाते हैं। मांस, मछली, लहसून प्याज, शराब, सिगरेट बीड़ी इत्यादि तमोप्रधान पदार्थ हैं जिनको खाने से मन ईश्वर में एकाग्र नहीं हो सकता। तमोगुणी पदार्थ के खाने से हिंसक मनोवृत्ति, स्वार्थपरता, मादकता और दूसरों के दुर्गुणों को देखने की वृत्ति और अपने अवगुणों को न देखने का स्वभाव बन जाता है।

अन्न तो सतोगुणी होना ही चाहिए किन्तु साथ ही साथ उस अन्न को बनाने वाला और खिलाने वाला भी अच्छे सतोगुणी मन वाला होना चाहिए क्योंकि मन का भी अन्न पर प्रभाव पड़ता है। मन के प्रकम्पन (व्हायब्रेशन) सारे वायु मण्डल पर प्रभाव डालते हैं। अन्न इन प्रकम्पनों को ग्रहण करता है और उनसे प्रभावित होता है। जैसे चुम्बक लोहे को अपनी ओर आकर्षित करता है वह शक्ति हमें दिखाई नहीं देती किन्तु जब आकर्षण होता है तब उस शक्ति का पता लगता है इसी प्रकार मन का अन्न पर जो प्रभाव होता है उस प्रभाव की जानकारी अन्न खाने के बाद होती है। शुद्ध मन वाले व्यक्ति से जो प्रकाश और शक्ति की किरणें निकलती हैं उससे अन्न भी शुद्ध हो जाता है।

मनुष्य की दृष्टि और एकाग्रता का प्रभाव वैज्ञानिक लोग भी मानते हैं। मास्को से एक समाचार प्रकाशित हुआ था कि रूसी महिला जिसका नाम मीखी लोवा है उसने घड़ी पर दृष्टि डालकर उसका चलना बंद कर दिया था। यह प्रयोग उसने वैज्ञानिकों के सामने भी करके दिखाया था वह अपनी दृष्टि से घड़ी की रफ्तार बंद कर देती थी अथवा तेज कर देती थी। इसके अलावा उसने नमकदानी गिलास और सेब पर दृष्टि डालकर उन चीजों को हिला दिया था। डबल रोटी का भी उसने एक प्रयोग किया था, डबल रोटी पर उसने दृष्टि जमाई तो वह उछलकर उसके मुंह में जा पड़ी। यह समाचार २८ मार्च सन् १९६८ के टाइम्स आफ इण्डिया में छपा था। रूसी सरकार के वक्ताओं ने भी यह माना और घोषणा की कि मन की शक्ति का प्रकृति पर प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि मन की जो सतो रजो और तमो वृत्तियां होती हैं उनका प्रकृति पर और अन्न पर आवश्यक प्रभाव पड़ता है।

भारत में प्रसाद अथवा भोग बनाने की जो प्रथा है, उसके पीछे भी वास्तव में वही मान्यता है। गृहस्थी लोग पुजारी के पास भोग ले जाते हैं। पुजारी भोग

चढ़ाता है फिर उस भोग को ग्रहण किया जाता है। उन दोनों की यह मान्यता होती है कि देवताओं द्वारा वह भोग स्वीकार होने से शुद्ध बन जाएगा और मन को पवित्र और शान्त बनाने वाला हो जाएगा। सिक्ख लोगों में भी भोग लगाने की प्रथा है। अतः सिद्ध है कि प्राचीन काल से यह मान्यता है कि मन का अन्न पर प्रभाव पड़ता है। इसलिए भक्त लोग प्रसाद अथवा भोग को महत्व देते हैं और समझते हैं कि यह शुद्ध मन से बनाया गया है, भगवान को अर्पण किया गया है और उसको पकाते समय और देते समय भगवान की स्मृति पर ध्यान रखा गया है। अतः परमपिता परमात्मा शिव ने समझाया है कि अन्नकी सात्विकता के विषय में यह ध्यान देना जरूरी है कि भोजन को बनाने वाले की स्थिति कैसी है! लोग भोजन बनाते समय बर्तन और वस्त्र की स्वच्छता को तो देखते हैं किन्तु भोजन बनाने वाले की मानसिक स्वच्छता पर ध्यान नहीं देते। अगर भोजन बनाने वाला व्यक्ति तमोगुणी है अर्थात तमो विकारों से पीड़ित है और उसकी दृष्टि अपवित्र है तो उसके द्वारा बनाये हुए भोजन का सेवन करने से सेवन करने वाले मनुष्य का मन भी दूषित हो जाता है।

यदि मनुष्य किसी को कामी दृष्टि से अथवा ईर्ष्या की दृष्टि से देखता है तो लोग कहते हैं कि इसकी निगाह बुरी है। आँखों से आत्मा का विचार या भाव प्रगट होता है। इस संबंध में रूसी महिला का प्रयोग ऊपर बताया गया है। अतः आंखों द्वारा मन या आत्मा का अन्न पर प्रभाव पड़ता है इसीलिए कई श्रृदालु लोग सन्त महात्मा के पास फल-बतासे, अथवा अन्य पदार्थ ले जाकर कहते हैं महाराज इस पर दृष्टि डालिये। क्योंकि वे समझते हैं कि महान और पवित्र मनुष्यों की दृष्टि में बल होता है। कई लोग तो यहां तक मानते हैं कि यदि कोई भोजन को ललचाई दृष्टि से अथवा अपवित्र दृष्टि से देखता है तो कहते हैं कि भोजन पर नजर लग गई। अतः दृष्टि का अन्न पर प्रभाव पड़ता है इसलिए भोजन बनाने वाले का मन पवित्र होना चाहिए और मन में काम वासना, क्रोध, लोभ की लहर नहीं होनी चाहिए और शुद्ध मन से भगवान की याद से जो व्यक्ति भोजन बनावे वैसे ही भोजन को ग्रहण करना चाहिए ताकि हमारा मन और वृत्ति पवित्र और शुद्ध रहे। क्रोधी स्वभाव के व्यक्ति द्वारा बनाया हुआ भोजन सतोगुणी नहीं माना जाता बल्कि अशुद्ध होता है। गीता में भी कहा गया है कि जो मनुष्य भगवान को भोग नहीं लगाता वह चोर है, जो ब्रह्मचर्य का पालन नहीं करता वह असुर है और योगी को शुद्ध आहार-व्यवहार करना चाहिए। सतोगुणी भोजन ही वास्तव में वैष्णव भोजन है इसलिए भोजन खाने से पहले परमात्मा की स्मृति में स्थिति होकर उसे अपर्ण करके स्वयं को आत्मा निश्चय करके भोजन पर सतोगुणी दृष्टि डालकर ही भोजन करना चाहिए। और जिस कमाई से वह भोजन बनाया गया है वह कमाई भी शुद्ध अर्थात् ईमानदारी से कमाई गई होनी चाहिए। यदि हम आर्य समाज, बौद्ध और सिख आदि धर्मों के स्थापकों के जीवन चरित्र पर दृष्टि डालें तो मालूम होगा कि वे लोग भी इस बात पर ध्यान देते थे—जिससे हम अन्न ले रहे हैं उसकी वृत्ति, दृष्टि और कमाई कैसी है। बौद्ध ग्रन्थों में बौद्ध भिक्षु, जो एक पवित्र सन्यासी था उसका किस्सा प्रसिद्ध है। उस भिक्षु का नाम "सुन्दर समुद्र कुमार" था जो अन्जाने में एक वैश्या के यहां से अन्न लेकर खाया करता था। तो कुछ दिनों बाद वह लोभी और कामी होने लगा। तो बुद्ध ने उसे पतित होने से बचा लिया। अतः यह किस्सा भी इस बात को सिद्ध करता है कि "मन का अन्न पर और अन्न का मन पर प्रभाव" पड़ता है। आर्य समाज के प्रर्वत्तक स्वामी दयानन्द ने भी आहार शुद्धि का महत्त्व बताया है और आर्य समाज के प्रचारक आनन्द स्वामी ने "प्यारा ऋषी" नामक पुस्तक में यह लिखा है कि कुकर्मी का भोजन नहीं खाना चहिए।

अतः लौकिक परम्पराओं से, मान्यताओं से, तथा वैज्ञानिक प्रयोगों से यह बात प्रमाणित होती है कि अन्न का मन पर और मन का अन्न पर निश्चित रूप से व्यक्ति और वस्तु के गुणों के मुताबिक अनुकूल प्रभाव पड़ता है।

□

आध्यात्मिक सेवा समाचार

(ब्र० कु० श्रीराम, कृष्णानगर,
देहली द्वारा संकलित)

●

मणिनगर : (अहमदाबाद) सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि सिंधी समाज के चेरीचंद पर्व के उपलक्ष्य में अहमदाबाद शहर में निकाली गई भव्य शोभा यात्रा में, ब्रह्माकुमारीज की ओर से भी ब्र० वि० शं० तथा श्रीराधे-श्रीकृष्ण की चैतन्य झांकियां निकाली गईं जिनको नगर की हजारों आत्माओं ने देखा।

रोहतक : सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि बेरी में जन-जन को ईश्वरीय संदेश देने हेतू आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई, इस अद्भुत ज्ञान से प्रभावित होकर वहां के लोगों ने प्रतिदिन ज्ञान स्नान कराने के लिए दो कमरे दिए हैं। वहां पर नियमित कलास हो रही है।

जगाधरी : सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि निकटवर्त्ती कृष्णपुरा गांव में प्रोजैक्टर शो तथा प्रवचन का कार्यक्रम किया गया। इसके अतिरिक्त जगाधरी में भी तीन विशेष स्थानों पर प्रोजैक्टर शो के कार्यक्रम दिए गए।

बड़ौदा : सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि निकटवर्त्ती गांवों—जाम्बवा, वासना, बोडेली में आध्यात्मिक प्रदर्शनी द्वारा जन-जन को ईश्वरीय संदेश दिया गया। राजयोग शिविर द्वारा भी ४० आत्माओं ने ईश्वरीय अनुभूति की।

रायपुर : सेवा केन्द्र से ब्र० कु० कमला लिखती हैं कि निकटवर्त्ती राजनांद गांव में विशाल प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसे ६००० आत्माओं ने देखा। राजयोग शिविर से भी ४०० आत्माओं ने लाभ उठाया।

शिवसागर : सेवा केन्द्र की ओर से रंगघर चार आली में दो दिन के लिए आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई, जिसका उद्घाटन जुडिशियल मैजिस्ट्रेड भ्राता आर० के० शर्मा तथा जुडिशियल मैजिस्ट्रेड कु० इन्द्राशाह जी के द्वारा सम्पन्न हुआ।

बटाला : सेवा केन्द्र की ओर से जन-जन को ईश्वरीय संदेश देने हेतू एक सप्ताह में ९ विभिन्न स्थानों पर "औद्योगिक शांति प्रदर्शनी" का आयाजन किया गया। प्रदर्शनी को देखकर फैक्टरीयों के मालिक व मजदूर सभी बहुत खुश हुए। इसके अतिरिक्त धारीवाल वूलनमिल्स के आफिसर कलब में प्रवचन कार्यक्रम भी रखा गया।

कृष्णानगर : (दिल्ली) सेवा केन्द्र की ओर से निकटवर्त्ती गांव उस्मानपुर में, तथा पंडित पार्क एक्सटेंशन में में आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई। इसके अतिरिक्त प्रतापनगर में प्रवचन, ज्ञान शिविर, योग शिविर का कार्यक्रम रखा गया। इन कार्यक्रमों से हजारों आत्माओं ने लाभ उठाया। पंडित पार्क एक्सटेंशन में प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए वहां के कार्यकारी पार्षद भ्राता दर्शन कुमार वहल ने कहा है कि ऐसी आध्यात्मिक प्रदर्शनी हर मोहल्ले में हो तभी समाज का उत्थान हो सकता है।

कटक : सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि "आल इंडिया रेडियो कटक" से 'पंचम सिंह की जीवन कहानी' तथा 'ब्रह्माकुमारियों का ब्रह्मचारी जीवन' विषयों पर प्रसारण किया गया। इसके अतिरिक्त वेनापंजरी, जटनी, अढ़मपुर आदि स्थानों पर प्रवचन, प्रोजैक्टर शो तथा अध्यात्मिक प्रदर्शनी के कार्यक्रम रखे गए।

हांसी : में नए रोजयोग भवन की नींव रखे जाने के अवसर पर हांसी के ४० प्रतिष्ठित व्यक्ति पधारे। इस अवसर पर दादी चन्द्रमणि द्वारा किए गए प्रवचन को सुनकर आए हुए सभी व्यक्ति बहुत खुश हुए।

धर्मशाला : सेवा केन्द्र की ओर से समाचार प्राप्त हुआ है कि कोटला शहर में सात दिन के लिए आध्यात्मिक प्रदर्शनी, राजयोग शिविर, तथा प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें स्थानीय जनता ने बहुत रुचि दिखाई और इसे जारी रखने का आग्रह किया।

बम्बई : (बोरीवली) सेवा केन्द्र की ओर से भाईंदर में विश्व-शांति पथ-प्रदर्शक मेले का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन जिला परिषद के अध्यक्ष भ्राता मिठालाल जी जैन द्वारा सम्पन्न हुआ। इस मेले से लगभग १२००० आत्माओं ने, तथा योग शिविर से लगभग ८०० भाई-बहिनों ने लाभ लिया। "जीवन शांतिमय कैसे बिताएँ" इस विषय पर विशेष स्नेह मिलन का आयोजन किया गया।

सोनीपत : सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि माता क भक्तों ने ८ दिन के लिए जागरण किया और एक बहुत बड़ी शांति यात्रा झांकियों सहित निकाली गई, जिसमें सेवा केन्द्र की ओर से भी आठ देवियों की चैतन्य झांकी निकाली गई, इसके अतिरिक्त सिक्का कालोनी में एक चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई।

शालीमार बाग : (दिल्ली) सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ कि वहां पर भक्तों द्वारा आयोजित विशाल

भगवती जागरण के अवसर पर ब्र० कु० राज बहन ने 'ज्योति' का महत्त्व बताकर सच्ची देवी बनने के लिए प्रेरित किया। देवी के समक्ष ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने तथा प्याज न खाने की सदा के लिए धारणा का व्रत दिलाया।

अशोक विहार : (दिल्ली) सेवा केन्द्र की ओर से चार दिवसीय आध्यत्मिक प्रदर्शनी तथा राजयोग शिविर का आयोजन किया गया, तथा सिंधी पंचायत के झूलेलाल मंदिर में व कई अन्य स्थानों पर भी प्रवचन के कार्य-क्रम रखे गए।

संकेश्वर : सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि हिरण्य केशी शुगर कारखाना में 'मधुर महादेव मंदिर' में ईश्वरीय ज्ञान सप्ताह रखा गया। इसके अतिरिक्त अम्मणगी तथा अम्मनभांवि गांवों में प्रवचन किए गए।

राजकोट : सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि धारेश्वर मंदिर में, तथा पंचनाथ मंदिर में ५-५ दिन की प्रदर्शनी तथा ३-३ दिन के योगशिविरों का कार्यक्रम रखा गया। वहां पर भक्तों द्वारा शास्त्री मैदान में आयोजित 'भागवत सप्ताह' समारोह के अवसर पर भी आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई। जिससे लगभग डेढ़ लाख आत्माओं ने लाभ उठाया तथा हजारों रुपए का साहित्य बिक्री हुआ। इसके अतिक्ति यहां पर भ्राता हरेश भाई के आगमन पर अंध महिला विकास गृह में, दिव्य जीवन संघ के हाल में, ताज कान्फ्रेंस हाल में तथा श्रमजीवी सोसायटी में प्रवचनों के कार्यक्रम रखे गए।

राउरकेला : सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि निकटवर्ती लोहनी पाड़ा गांव में चार दिवसीय आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई। अंतिम दिन प्रोजेक्टर शो भी दिखाया गया।

नडियाड : सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि हरिजनों कीबस्ती देवा गांव में तथा विश्वनगर सोसायटी में कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसके अतिरिक्त पलावा गांव में आध्यात्मिक प्रदर्शनी, प्रवचन, राजयोग फिल्म तथा राजयोग शिविर, ज्ञान शिविर, धारणा शिविर द्वारा भी अनेकानेक आत्माओं को ईश्वरीय संदेश दिया गया।

भुवनेश्वर : सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि टांगी (कटक) में तथा त्रिलोचनपुर (पुरी) में "विश्व शांति महायज्ञ" के उपलक्ष्य में विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, हजारों आत्माओं को ईश्वरीय संदेश मिला। इसके अतिरिक्त दसपल्ला व मध्य खंड आदि स्थानों पर प्रवचन के कार्यक्रम किए गए।

गांधीनगर : सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि पेठापुर, पोर गांव तथा सेक्टर २८ गांधीनगर आदि स्थानों पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी तथा योगशिविर के आयोजन किए गए। इसके अतिरिक्त डा० गिरिश पटेल की अध्यक्षता में डाक्टर-शिविर रखा गया जिसमें २५ डाक्टर्स ने भाग लिया।

जामनगर : सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि यहाँ पर तीन दिन के लिए आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त स्लाइड शो तथा ज्ञान शिविर का भी आयोजन किया गया।

नारायणगढ़ (नेपाल) : सेवा केन्द्र की ओर से वीर गंज जेल में, जेल सुपरिनटेंडेंट के निमंत्रण पर प्रवचन किया गया तथा पंचमसिंह की जीवन कहानी की १०० प्रतियां छपवा कर जेल में बांटी। नेपाल में 'विश्व शांति समिति' का चौथा अधिवेशन हुआ जिसमें सभी प्रमुख व्यक्ति उपस्थित हुए, उनके समक्ष प्रवचन किया गया। इसके अतिरिक्त नेपाल में भारत के नए राजदूत से भी मुलाकात की गई।

पहाड़ गंज (नई दिल्ली) : सेवा केन्द्र द्वारा विभिन्न स्थानों पर आध्यात्मिक प्रदर्शनियां तथा राजयोग शिविर आयोजित किये। **मुलतानी ढांडा** पहाड़ गंज में ५ दिवसीय प्रदर्शनी तथा राजयोग शिविर का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन नगर निगम के सदस्य भ्राता गोविन्द राम वर्मा जी ने किया। **एक अन्य क्षेत्र लड्डु घाटी** में दो दिन की प्रदर्शनी तथा राजयोग शिविर आयोजित किये गये। प्रदर्शनी का उद्घाटन दिल्ली महानगर परिषद के सदस्य भ्राता रंजीत राय शर्मा जी ने किया।

नरेला के समीप हरियाणा के एक गांव **प्याऊ मनियारी** तथा नरेला में वहाँ के लोगों के निमन्त्रण पर प्रदर्शनी लगाई गई तथा राजयोग शिविर किया गया, फलस्वरूप भारी संख्या में लोगों ने आध्यात्मिक लाभ उठाया।

(शेष पृष्ठ ११ पर देखिए)

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक बी 9/19 कृष्णनगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा संगम प्रिंटिंग सर्विस कं० शाहदरा दिल्ली-32 से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D, (B)—70